



सविता



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका
अप्रैल 2024-सितंबर 2024
41 वां अंक



प्रकाशक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल
तिरुवनंतपुरम



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका
अप्रैल 2024-सितंबर 2024
41 वां अंक

पत्रिका परिवार

संरक्षक

सुश्री प्रीति अब्राहम
महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री मोहम्मद डानिष के
उप महालेखाकार(प्रशासन)

सदस्य

श्री एस बिजु
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती आशा जे आर
हिन्दी अधिकारी

सुश्री अनिता दास
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्री विष्णु एस पी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

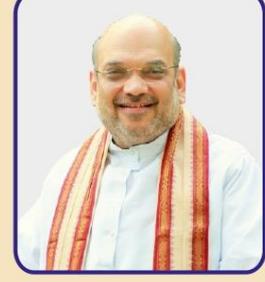
सुश्री आकांशा गहलोत
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

कवर पेज फोटोग्राफी : श्री जी सतीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं,
संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्घरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

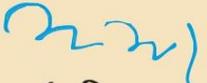
राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)



संदेश

भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अंगीकार करने के महत्वपूर्ण निर्णय के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा की “हीरक जयंती” मनाई जा रही है। इस भव्य अवसर पर आप सभी को हार्दिक अभिनंदन और शुभकामनाएं। इस शुभ अवसर पर अपने कार्यालय की ई-पत्रिका के 41 वें अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी महसूस हो रही है। राजभाषा के रूप में हिन्दी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनकर संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांधने की अहम भूमिका निभा रही है। हमारी पत्रिका ‘सविता’ हिंदी भाषा की इस मूल भावना के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल आपको पसंद आएंगी बल्कि आपको इस मनोरम भाषा में लिखने के लिए प्रेरित भी करेंगी। मैं सभी रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को सजाया है। संपादकीय मंडल भी बधाई का पात्र है जिनके प्रयासों से हमारी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन सुनिश्चित हुआ है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।


प्रीति अब्राहम
महालेखाकार



संपादकीय

प्रिय पाठकों,

अपने कार्यालय की हिन्दी गृह ई-पत्रिका के प्रकाशन की श्रृंखला को जारी रखते हुए “राजभाषा हीरक जयंती” के इस शुभ अवसर पर हम “सविता” के 41 वें अंक के साथ पाठकों के सामने प्रस्तुत है। इस अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। ई – पत्रिका “सविता” का यह संस्करण कई अधिक समावेशी है क्योंकि हमारी पत्रिका इस बार मुख्य कार्यालय के साथ-साथ शाखा कार्यालय तृशूर का भी प्रतिनिधित्व कर रही है। यह अंक दोनों कार्यालयों के सदस्यों द्वारा रची गई रचनाओं से सुशोभित है।

इस पत्रिका के द्वारा हमारा प्रयास रहता है कि कार्यालय से जुड़े ज्यादा से ज्यादा कर्मचारियों को हिन्दी में कविताएं, लेख, कहानियां आदि लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। यह पत्रिका उस प्रोत्साहन और कर्मचारियों की हिन्दी में अभिरुचि का प्रमाण है। पत्रिका में हिन्दी के राजभाषा के रूप में 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में राजभाषा विभाग द्वारा भारत मंडप, दिल्ली में 14-15 सितंबर को आयोजित ‘हिन्दी दिवस 2024 एवं चौथे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन’ से संबंधित रिपोर्ट है, साथ ही साथ हमारे शाखा कार्यालय सहित मुख्य कार्यालय में आयोजित किए गए ‘हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2024 की भी झलकियां हैं। राजभाषा हिन्दी के संवर्धन एवं प्रचार प्रसार में हमारे कार्यालय का विनम्र प्रयास कविताओं और लेख के माध्यम से ‘सविता’ के द्वारा आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव महसूस कर रहे हैं। पत्रिका को अधिक रोचक एवं प्रभावी बनाने में आपके बहुमूल्य सुझाव हमारे लिए प्रेरणास्रोत रहेगा।

मोहम्मद डानिष के
उप महालेखाकार

अनुक्रमणिका

- 1 . भारत की स्वतंत्रता..... श्री अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
- 2 . आस्थापूर्ण नींव का विकास: जीवन को आकार देने में धार्मिक संस्कार का महत्व.....सुश्री. अनिशिमा
- 3 . हिन्दी छायावादी युग के सशक्त हस्ताक्षर : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला..... श्री दीपक, डी ई ओ
- 4 . इंतज़ार.....सुश्री अनिता दास, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
- 5 . शहरीकरण के कारण प्रदूषण श्री अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
- 6 . पानीहसीना पी पी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
- 7 . कृतज्ञता..... सुश्री. आकांशा गहलोत, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
- 8 . भगवद्गीता की सीख..... श्री. मणिकंठन वी.के., सहायक पर्यवेक्षक
- 9 . बिना किसी मूल्य निहिता साईकुमार सुपुत्री : साई कुमार व् ले प
- 10 . ध्वनि प्रदूषण.....दीपक के वी,सहायक पर्यवेक्षक
- 11 . हिन्दी दिवस 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, भारत मंडपम,दिल्ली
- 12 . हिन्दी पखवाड़ा रिपोर्ट -2024
- 13 . भीमराव आम्बेडकर जी की जीवनीश्रीमती सुनीता कुमारी, पत्नी श्री शशि कुमार
- 14 . महिला सशक्तीकरण.....श्रीमती अंबिका के, पत्नी श्री दीपक के वी,सहायक पर्यवेक्षक
- 15 . संघर्ष की ज्योति : दृढ़ संकल्प का दीप..... श्री अंकित सिंह, लेखापरीक्षक
- 16 . डरना मना है..... श्री जे ए साईकुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक



श्री अविनाश नाथ
लेखापरीक्षक

भारत की स्वतंत्रता

स्वतंत्रता का सूरज चमका, भारत भूमि पर प्यारा,
गुलामी की जंजीरों को तोड़, आया स्वतंत्रता का नारा।
वीरों ने बलिदान दिया, मातृभूमि की खातिर, रक्त से
सींचा धरती को, आजादी की राह पर।

गांधी, नेहरू, भगत सिंह, और सुभाष चंद्र बोस, इनके
साहस और संकल्प ने, दिया हमें स्वतंत्रता का जोश।

अहिंसा और सत्याग्रह का, जब गूंजा था नारा, ब्रिटिश
हुकूमत हिल गई, और भारत हुआ हमारा।

लाल किले की प्राचीर से, जब तिरंगा लहराया, हर
भारतीय का दिल, गर्व से भर आया।

आजादी का वो दिन, 15 अगस्त का प्यारा, हर दिल
में बसा, हर आँख में सपना सारा।

स्वतंत्रता का अर्थ है, जिम्मेदारी और कर्तव्य, देश की
सेवा में, हर नागरिक का संकल्प।

शिक्षा, स्वास्थ्य, और विकास की राह पर, हम सब
मिलकर चलें, यही है हमारा सपना प्यारा।

भारत की विविधता में, एकता की मिसाल, हर धर्म,
हर भाषा, यहाँ है सबका ख्याल।

उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक, भारत की संस्कृति,
है अद्वितीय और अनमोल।

गंगा, यमुना, और सरस्वती की धारा, हिमालय की
ऊँचाई, और रेगिस्तान की माया।

सभी मिलकर गाते हैं, स्वतंत्रता का गीत, भारत माता
की जय, हर दिल ने पुकारा।

स्वतंत्रता का पर्व है, हर साल मनाते हैं, वीरों की
गाथाएँ, हम सबको सुनाते हैं।

देशभक्ति की भावना, हर दिल में जगाते हैं, भारत की
स्वतंत्रता, हम सबको याद दिलाते हैं।

आओ मिलकर संकल्प लें, देश को आगे बढ़ाएँ, हर
क्षेत्र में प्रगति करें, और नाम रोशन कराएँ।

स्वतंत्रता का अर्थ समझें, और उसे निभाएँ, भारत को
महान बनाएं, और दुनिया को दिखाएँ।

स्वतंत्रता की राह पर, चलें हम सब मिलकर, हर कदम
पर हो प्रगति, और हर दिल में हो उमंग।

नए भारत का निर्माण करें, हर क्षेत्र में हो विकास, हर
नागरिक का हो सपना, भारत बने महान।

किसानों की मेहनत से, हर खेत हो हरा-भरा, शिक्षा
की ज्योति से, हर घर हो उजियारा ।

स्वास्थ्य सेवाओं में हो सुधार, हर व्यक्ति हो स्वस्थ,
स्वतंत्रता का असली अर्थ, हो सबके लिए स्पष्ट ।

नारी का सम्मान हो, हर बेटी को मिले अधिकार,
समानता की राह पर, चले हमारा देश महान ।

विज्ञान और तकनीक में, हो हम सबसे आगे, हर युवा
का हो सपना, भारत को ऊँचाई पर ले जाए ।

संस्कृति और परंपरा का, हो हम सबको गर्व, हर
त्योहार मनाएं मिलकर, हर दिल में हो हर्ष ।

स्वतंत्रता का पर्व है, हर साल मनाएं धूमधाम से, वीरों
की गाथाएँ, हम सबको सुनाएं शान से ।

आओ मिलकर संकल्प लें, देश को आगे बढ़ाएँ, हर
क्षेत्र में प्रगति करें, और नाम रोशन कराएँ ।

स्वतंत्रता का अर्थ समझें, और उसे निभाएँ, भारत को
महान बनाएं, और दुनिया को दिखाएँ ।



आस्थापूर्ण नींव का विकास:

जीवन को आकार देने में धार्मिक संस्कार का महत्व



सुश्री. अनिशामा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मानव अस्तित्व के इस जटिल जाल में, धर्म एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में उभर कर आता है, जो चुनौतीपूर्ण दुनिया में लोगों को टिके रहने के एक मार्ग की पेशकश करता है। यह एक दिशासूचक के रूप में कार्य करता है, जो जीवन के गहन प्रश्नों के उत्तर प्रदान करता है तथा मुश्किल समय में धीरज प्रदान करता है।

धर्म के दायरे में एक बच्चे के पालन-पोषण पर विचार करें। ऐसे बच्चे के पास जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक विश्वसनीय सहारा होता है, जो अपनी आस्था में शक्ति और उद्देश्य पाता है। अब इसकी तुलना किसी ऐसे बच्चे से करें जिसका पालन-पोषण किसी धार्मिक प्रभाव के बिना हुआ हो। हालांकि उसके पास प्रश्न करने और जीवन को दार्शनिक दृष्टि से देखने की स्वतंत्रता हो सकती है, लेकिन उसके पास वह सांत्वनादायक आधार नहीं होता जो विपत्ति में धर्म उपलब्ध करा सकता है। मैं ऐसे व्यक्तियों से मिली हूँ जो धार्मिक मार्गदर्शन में पले-बढ़े थे, जिन्हें कठिन समय में भारी संघर्षों का सामना करना पड़ा और जिसने उन्हें आत्महत्या के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया। परंतु नरक में जाने के संभावित भय ने उनके लिए अप्रत्याशित बाधा का काम किया, जिसने अंततः उन्हें बचा लिया। अब, वयस्क होने पर, वे उस डर को एक आशीर्वाद के रूप में देखते हैं जिसने एक दुखद अंत को रोका।

माता-पिता अपने बच्चों को उनके प्रारंभिक वर्षों में भरोसेमंद आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, वयस्क होने पर उन्हें अपनी मान्यताओं को चुनने की स्वायत्तता प्रदान करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। धार्मिक पालन-पोषण के लाभों की वकालत करते समय, संतुलित दृष्टिकोण पर जोर देना आवश्यक है। धार्मिक कार्यों में अतिवाद, बच्चों को सही और गलत की वास्तविकताओं से अंधा कर देना, हानिकारक हो सकता है। हर चीज का नियंत्रित मात्रा में होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि सीमा से बाहर होना जहरीला हो सकता है।

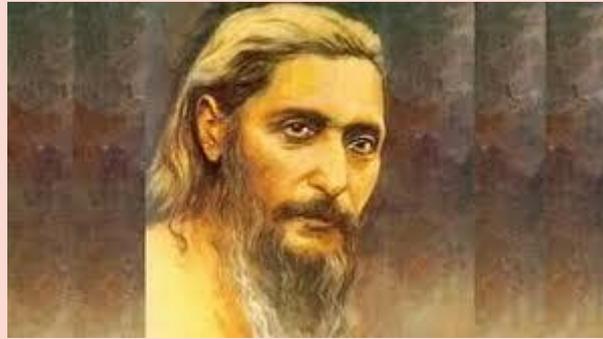
धर्म को मूलतः समाज में शांति और सद्भाव लाने के साधन के रूप में माना गया है। इसने नियम और विनियम प्रस्तुत किये तथा एक नैतिक ढांचा स्थापित किया जिससे लोग शांतिपूर्वक एक साथ रह सके। विश्व एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गया है जहां धर्म, जिसने स्थिरता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, अब बदलाव देख रहा है क्योंकि लोग गैर-धार्मिक विश्वासों की खोज कर रहे हैं।

निष्कर्षतः धर्म जीवन की चुनौतियों का सामना कर रहे व्यक्तियों के लिए एक मूल्यवान ढांचा प्रदान करता है। माता-पिता को धार्मिक शिक्षा देते समय अपने बच्चों में आलोचनात्मक ढंग से सोचने और अपनी मान्यताओं को चुनने की क्षमता का भी विकास करना चाहिए। जैसे-जैसे विश्व विकसित

होता है, सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए परंपरा और प्रगतिशील विचार के बीच संतुलन बनाना आवश्यक हो जाता है।



श्री दीपक
डी ई ओ



हिन्दी छायावादी युग के सशक्त हस्ताक्षर : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

‘महाप्राण’ नाम से विख्यात; 21 फरवरी 1896 को बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में जन्में निराला जी 1930 से वसंत पंचमी के दिन अपना जन्मदिन मनाया करते थे। छायावादी दौर के चार स्तंभों में से एक त्रिपाठी जी की कीर्ति का आधार ‘सरोज-स्मृति’, ‘राम की शक्ति-पूजा’ और ‘कुकुरमुत्ता’ सरीखी लंबी कविताएँ हैं; जिनकी रचना उन्होंने अपने प्रसिद्ध गीतों और प्रयोगशील कवि-कर्म के साथ-साथ ही जारी रखी। उन्होंने बेहतरीन कथाएँ भी लिखी। अनुवादक के रूप में भी वे सक्रिय रहे। वे हिंदी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। वे मनुष्यों की मुक्ति के पक्षधर थे।

बचपन में सूर्यकुमार के नाम से पहचाने जाने वाले निराला ने घिसी-पिटी परंपराओं को छोड़कर नवीन

शैली में कविताएं लिखने पर जोर दिया। निराला ने हाई स्कूल तक शिक्षा पाई। उन्होंने स्वाध्याय से ही हिंदी, संस्कृत और बांग्ला भाषा और साहित्य का ज्ञान हासिल किया। अगर उनके जीवन को उनके ही शब्दों में समझें तो दुःख की कहानी-सी है। तीन वर्ष की आयु में उनकी माँ का और बीस वर्ष के होते-होते उनके पिता का देहांत हो गया। संयुक्त परिवार था और बेहद अभावों का दौर चल रहा था। पहले महायुद्ध के बाद फैली महामारी में उनकी पत्नी मनोहरा देवी का भी निधन हो गया। इस महामारी में उनके चाचा, भाई और भाभी का भी देहांत हो गया। इसके बाद की उनकी जीवन-स्थिति को उनकी काव्य-पंक्तियों से समझा जा सकता है।

निराला जी का व्यक्तित्व घनघोर सिद्धांतवादी और साहसी था। उनका रचना-संसार विविधता और समृद्धता लिए हुए है। हिंदी साहित्य संसार में उनके आक्रोश और विद्रोह, उनकी करुणा और प्रतिबद्धता की कई मिसालें और कहानियाँ प्रचलित हैं। उनके जीवन का आखिरी वक्त इलाहाबाद में बीता। वही दारागंज नाम के मुहल्ले में 15 अक्टूबर 1961 को उनका देहावसान हुआ। उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत काम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है।

1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह 'परिमल' की भूमिका में उन्होंने लिखा है –

“मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं फिर भी स्वतंत्र है। इसी तरह कविता का भी हाल है।”

‘राम की शक्ति पूजा’ के जरिए निराला ने राम को समाज में एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। यह अंधेरे से होकर प्रकाश में आने की कविता है।

इलाहाबाद में पत्थर तोड़ती महिला पर लिखी उनकी कविता आज भी सामाजिक यथार्थ का एक आईना है। उनका ज़ोर वक्तव्य पर नहीं वरन् चित्रण पर था, सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती महिला का रेखांकन उनकी काव्य चेतना की सर्वोच्चता को दर्शाता है –

वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर
कोई न छायादार पेड़

वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन
गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु-मालिका अट्टालिका प्राकार

इसी प्रकार राह चलते भिखारी पर उन्होंने लिखा-

पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक मुट्ठी भर दाने को,
भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलता।
दो टूक कलेजे के करता पछताता।

सौ पदों में लिखी गयी ‘तुलसीदास’ निराला की सबसे बड़ी कविता है, जो कि 1934 में लिखी गयी और 1935 में सुधा के पाँच अंकों में किस्तवार प्रकाशित हुई। इस प्रबंध काव्य में निराला ने पत्नी के युवा तन-मन के आकर्षण में मोहग्रस्त तुलसीदास के महाकवि बनने को बखूबी दिखाया है –

जागा जागा संस्कार प्रबल
रे गया काम तत्क्षण वह जल
देखा वामा, वह न थी, अनल प्रमिता वह
इस और ज्ञान, उस और ज्ञान
हो गया भस्म वह प्रथम भान
छूटा जग का जो रहा ध्यान।

निराला की रचनाधर्मिता में एकरसता का पुट नहीं है। वे कभी भी बँधकर नहीं लिख पाते थे और न ही यह उनकी फक्कड़ प्रकृति के अनुकूल था। निराला की ‘जूही की कली’ कविता आज भी लोगों के जहन में बसी है। इस कविता में निराला ने अपनी अभिव्यक्ति को छंदों की सीमा से परे छंदविहीन कविता की ओर प्रवाहित किया है।

यही नहीं, निराला एक जगह स्थिर होकर कविता-पाठ भी नहीं करते थे। एक बार एक समारोह में आकाशवाणी को उनकी कविता का सीधा प्रसारण करना था, तो उनके चारों ओर माइक लगाए गए कि पता नहीं वे घूम-घूम कर किस कोने से कविता पढ़ें। निराला ने अपने समय के मशहूर रजनी सेन, चण्डीदास, गोविन्द दास, विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर इत्यादि की बांग्ला कविताओं का अनुवाद भी किया, यद्यपि उन पर टैगोर की कविताओं के अनुवाद को अपना मौलिक कहकर प्रकाशित कराने के आरोप भी लगे। राजधानी दिल्ली को भी निराला ने अभिव्यक्ति दी-

बोलते हैं स्यार रात यमुना-कछार में
लीन हो गया है रव
शाही अँगनाओं का
निस्तब्ध मीनार, मौन हैं मकबरे।

बसंत पंचमी और निराला का सम्बन्ध बड़ा अद्भुत रहा और इस दिन हर साहित्यकार उनके सान्निध्य की अपेक्षा रखता था। ऐसे ही किन्हीं क्षणों में निराला की काव्य रचना में यौवन का भावावेग दिखा-

रोक-टोक से कभी नहीं रुकती है
यौवन-मद की बाढ़ नदी की
किसे देख झुकती है
गरज-गरज वह क्या कहती है, कहने दो
अपनी इच्छा से प्रबल वेग से बहने दो।

निराला के काव्य में आध्यात्मिकता, दार्शनिकता, रहस्यवाद और जीवन के गूढ़ पक्षों की झलक मिलती है पर लोकमान्यता के आधार पर निराला ने विषयवस्तु में नये प्रतिमान स्थापित किये और समसामयिकता के पुट को भी खूब उभारा। अपनी पुत्री सरोज के असामायिक निधन और साहित्यकारों के एक गुट द्वारा अनवरत अनर्गल आलोचना किये जाने से निराला अपने जीवन के अंतिम वर्षों में

मनोविक्षिप्त से हो गये थे। पुत्री के निधन पर शोक-सन्तप्त निराला 'सरोज-स्मृति' में लिखते हैं-

मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल
दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।

सन् 1916 ई. में 'निराला' की अत्यधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचना 'जूही की कली' लिखी गयी। फिर निराला पर आर्थिक संकट का काल आया। सन् 1927-30 ई. तक वे लगातार अस्वस्थ रहे। यह समय उनके घोर आर्थिक संकट का काल था। इस समय जीवकोपार्जन के लिए उन्हें जनता के लिए लिखना पड़ता था।

'मेरे गीत और कला' शीर्षक निबन्ध में उन्होंने लिखा है- "भावों की मुक्ति छन्दों की मुक्ति चाहती है। यहाँ भाषा, भाव और छन्द तीनों स्वच्छन्द हैं।"

'तुलसीदास' में कथा की अपेक्षा चिन्तन का विस्तार अधिक है। भारत के सांस्कृतिक हास के पुनरुद्धार की प्रेरणा तुलसी को प्रकृति के माध्यम से ही मिलती है। इसे देखकर उनकी अंतर्वृत्तियाँ मन्थित हो उठी हैं। इन्हीं अंतर्वृत्तियों का निरूपण पुस्तक की मूल चिन्ताधारा है। इस प्रबन्ध में भी उनके शिल्पी का सहज ही भासित हो जाता है। छंदों की बंदिश, रूपकों की विशद योजना, नवीन शब्द-विन्यास आदि उनके अपने हैं। पर इस ग्रन्थ में ऐसे शब्दों का व्यवहार भी हुआ है, जो अर्थ की दृष्टि से इसे दुरुह बना देते हैं। फिर भी जो लोग काव्य में बुद्धि-तत्त्व की अहमियत स्वीकार करेंगे, वे इसे निर्विवाद रूप से एक श्रेष्ठ रचना मानेंगे।

प्रौढ़ कृतियों की सर्जना के साथ ही 'निराला' व्यंग्यविनोद पूर्ण कविताएँ भी लिखते रहे हैं। 'निराला' और पन्त मूलतः अनुभूतिवादी कवि हैं। ऐसे व्यक्तियों को व्यक्तिगत और सामाजिक परिस्थितियाँ बहुत प्रभावित करती हैं। इसके

फलस्वरूप उनकी कविताओं में व्यंग्योक्तियों के साथ-साथ निषेधात्मक जीवन की गहरी अभिव्यक्ति होने लगी। 'कुकुरमुक्ता' तक पहुँचते-पहुँचते वह प्रगतिवाद के विरोध में तर्क उपस्थित करने लगता है। उनके व्यंग्य की बानगी देखने के लिए उनकी दो गद्य की रचनाओं 'कुल्लीभाँट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' को भुलाया नहीं जा सकता।

सब मिलाकर 'निराला' भारतीय संस्कृति के द्रष्टा कवि हैं-वे गलित रूढ़ियों के विरोधी तथा संस्कृति के युगानुरूप पक्षों के उद्घाटक और पोषक रहे हैं पर काव्य तथा जीवन में निरन्तर रूढ़ियों का मूलोच्छेद करते हुए इन्हें अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। मध्यम श्रेणी में उत्पन्न होकर परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से मोर्चा लेता हुआ आदर्श के लिए सब कुछ उत्सर्ग करने वाला महापुरुष जिस मानसिक स्थिति में पहुँचा, उसे बहुत से लोग व्यक्तित्व की अपूर्णता कहते हैं। पर जहाँ व्यक्ति के आदर्शों और सामाजिक हीनताओं में निरन्तर संघर्ष हो, वहाँ व्यक्ति का ऐसी स्थिति में पड़ना स्वाभाविक ही है। हिन्दी की ओर से 'निराला' को यह बलि देनी पड़ी। जागृत और उन्नतिशील साहित्य में ही ऐसी बलियाँ सम्भव हुआ करती हैं- प्रतिगामी और उद्देश्यहीन साहित्य में नहीं।

'यथा नाम तथा गुण' की अगर प्रत्यक्ष तस्वीर देखनी हो तो हमें निराला जी की जीवनी पर नजर डालनी चाहिए। प्रगतिवाद प्रयोगवाद, काव्य के जनक और अपने नाम के अनुरूप हर क्षेत्र में निराले थे वो। अपने 62 वर्ष के जीवन में उन्होंने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इतना योगदान दिया कि युगों तक पाठक उनकी रचनाओं का लुत्फ उठाते रहेंगे।

वसंत के मौसम पर निराला ने लिखा :

सखि वसंत आया
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया !

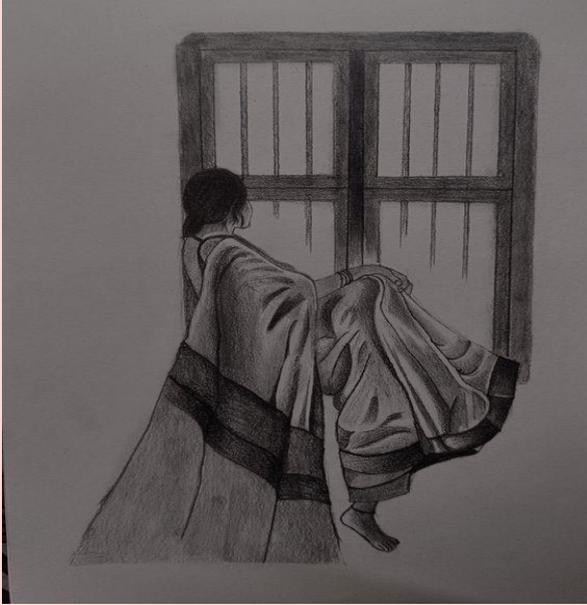
लेकिन निराला जैसे जीवंतता से भरपूर कवि जिन्होंने पतझड़ जैसा जीवन जिया लेकिन खुद को जीवंत बनाए रखते हुए कुछ इस तरह बयान किया है :

अभी ना होगा मेरा अंत
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे मन में मृदुल वसंत





सुश्री अनिता दास
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



इंतज़ार

कमरे में बाबा चारपाई पर लेटे हुए थे और घर में दीपावली की तैयारी जोर-शोर से चल रही थी, क्योंकि दीपावली में दो दिन ही रह गए थे। लेकिन मेरा इस चकाचौंध में कहाँ मन लगने वाला था, मुझे तो बस रह-रहकर कर्मचारी चयन आयोग के परीक्षा-परिणाम की ही चिंता सता रही थी। घर के कामों में खुद को मशगूल रखने की व्यर्थ कोशिश भी करके देख ली थी। लेकिन मन तो मन है-कितना भी ध्यान भटकाने की कोशिश की...सब धराशायी।

मन में पता नहीं कैसी उधेड़-बुन चल रही थी कि अगर मेरिट लिस्ट में नाम नहीं आया तो क्या करूँगी, बाबा को क्या बोलूँगी- ऐसी तमाम कश्मकश

मन में लिए काम कर रही थी, लेकिन मेरा सारा ध्यान बस परीक्षा-परिणाम पर था।

शाम होने लगी थी पर अब तक लिस्ट का कोई नामोनिशान नहीं था। तभी मेरा ध्यान बगल में पड़े घनघनाते फोन पर गया और कॉल श्रीनिता का था। फोन का हरा बटन दबा नहीं कि श्रीनिता जोर से चीख पड़ी, “मेरिट लिस्ट आ गई है, तूने देखा??”

यह सुनते ही मैं स्तब्ध रह गई, मगर खुद को संभालते हुए हड़बड़ाकर बोल पड़ी, “अरे नहीं...मैं तो भूल ही गई थी कि आज परिणाम भी आना है (माथे का पसीना पोछते हुए)...तुमने देख लिया क्या?”

उसने तुरंत 'नहीं' में सिर हिलाते हुए कहा कि नहीं बहिन ! हम भी अभी ही सुने हैं। थोड़ा रुककर (जैसे कि मेरी स्थिति भाप गई हो) उसने कहा, "तुम तो बहुत व्यस्त दिख रही हो, ऐसा करो कि तुम अपना रोल नंबर हमें बता दो, हम दोनों का पता करके बताते हैं"

मैंने 'हामी' भरी और धुरंधर पी टी उषा को पीछे छोड़ते हुए लपक कर फाइलों वाली अलमारी के पास जा पहुँची।

फिर बड़ी मशक्कत के बाद भी जब मुझे प्रवेश-पत्र हाथ नहीं लगा, मैं बहुत घबरा गई और मुँह से निकला, "हे भगवान! अब क्या करूँ?"

भगवान से याद आया, प्रवेश-पत्र तो कबसे मंदिर में रखकर भगवान भरोसे ही छोड़ रखा था, वह कागज भी और उसके साथ अपना भाग्य भी।

जैसे-तैसे मैं मंदिर वाले कमरे में गई और अपना प्रवेश-पत्र उठाया और रोल नंबर अपनी सखी को दे दिया।

रोल नंबर तो दे दिया, लेकिन मेरी व्याकुलता का कोई ठिकाना नहीं था।

रोल नंबर देते हुए ऐसा लग रहा था मानो अपनी इकलौती औलाद को पहले दिन स्कूल भेजा हो।

परीक्षा-परिणाम न जाने कितने लोगों का चैन लिए बैठा है, ना नींद है और ना सुकून.....बस बेचैनी।

मुझमें भी कौन से बड़े सुरखाब के पर लगे थे, मेरी हालत भी बिल्कुल वैसी ही थी, जैसे 'बिन पानी मीन'

समय हाथों से रेत की तरह फिसल रहा था और ठीक वैसे ही मेरी सहनशक्ति.....

कभी-कभी समय टिक-टिक कर चलता है तो कभी मानो इसने मैराथन की दौड़ में भाग लिया हो और अभी इसकी यही टिक-टिक चाल मेरी सहनशीलता के सारे बांध तोड़ने में लगी थी।

मैं छटपटाती हुई कभी घड़ी को ताकती तो कभी अपने फोन को...आज तो कमबख्त घड़ी को भी जाने क्या हो चला है....इसकी टिक-टिक भी थमी-सी जान पड़ती है।

बार-बार फोन में समय देख रही थी और भीतर ही भीतर यह सोचकर व्याकुल हो रही थी कि मेरिट लिस्ट में अगर मेरा नाम नहीं हुआ तो??.... फिर से अगली तैयारी के लिए कैसे साहस जुटा पाऊंगी।

तभी अनायास ही मुझे बाबा की बात याद आती है, मेरे बाबा हमेशा कहा करते हैं, "हार क्षणिक है और हौसला निरंतर।"

इसीलिए हार से कभी मन को कमजोर नहीं करना चाहिए, बल्कि पहले से भी अधिक हौसले के साथ मन को प्रोत्साहित करना चाहिए। इसी सिलसिले में मुझे भी कबीर की पंक्ति याद आई- "करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रसरी आवत-जात के, सिल पर परत निशान"

हाय री मूढमती! परीक्षा के समय मेरी यह बुद्धि कहां थी.....तब ऐसी भारी-भरकम सूक्तियां दिमाग में क्यों नहीं आईं। अब पछताए होत का जब चिड़ियां चुग गई खेत।

तभी मेरी नजर मेरी बहन पर गई, जो अपनी छोटी-छोटी आँखों से भौचक्का होकर अपना मुंह खोले मेरी ओर देख रही थी। जब मैंने इशारों में पूछा तो छोटकी तपाक से बोल पड़ी "लाड साहिबा आज सूरज पूरब से ही उगा है ना? अहो भाग्य हमारे...!! जो कर्मठ मोहतरमा आज घर के काम में हाथ बंटा रहीं हैं।

अचानक फिर से घनघनाता हुआ मेरा फोन बजता है.....

बड़ी तत्परता से फोन उठाते ही उधर से आवाज सुनाई दी.....

हैलो, आवाज़ पहचानी ? (सोचने की मुद्रा में)

कहाँ मैं किसी की आवाज़ पहचानने की सूझ-बूझ में थी।

मैंने बड़ी-सी हामी भरी.....(जानी-पहचानी सी तो लग रही थी)

उसने कहा, “मैंने मेरिट लिस्ट देख ली है”

यह सुनते ही मेरा दिल धक-धक करने लगा....मेरी हिम्मत ही नहीं हुई कि उससे कुछ पूछ पाऊँ।

वह न जाने क्या-क्या बोल रहा था, शब्द तो सुनाई पड़ रहे थे, मगर कुछ भी मेरे ज़हन में नहीं उतर रहा था।

सहसा वह बोलते-बोलते रुक गया।

थोड़ी देर बाद उसने पूछा, “तुमने भी इस परीक्षा को दिया था ना?”

मैंने बोला-हाँ

उसने कहा, “ठीक है, मैं देखकर बताता हूँ।” (फोन कटने की आवाज़)

मैं उस आवाज़ को पहचानने की कोशिश करने लगी, तब मैंने अपने फोन में देखा तो पता चला कि यह वही लड़का है जिसे मैं बहुत पसंद करती हूँ। पता चलते ही कि वह मेरा पसंदीदा इंसान है, मैं थोड़ी परेशान-सी हो गई।

“क्या सोचेगा मेरे बारे में, अगर मेरा नाम मेरिट में नहीं हुआ तो?”

यही सोचेगा कि मैं कमजोर छात्रा हूँ और इससे वह मुझे नापसंद करने लगा तो?

हाय ! (अफसोस करती हुई)

और अगर मेरे सारे दोस्तों को नौकरी हो जाएगी, मैं तो अकेली हो जाऊँगी।

तभी मेरा फोन फिर घनघनाता है और इस बार तो मैं फोन को देखते ही समझ गई कि मेरे उसी दोस्त (मनपसंद इंसान) का कॉल है।

मैं झिझकती हुई कॉल उठाती हूँ और उठाते ही इतना शोर होता है कि मैं कुछ सुन नहीं पाती हूँ।

और कांपती हुई आवाज़ में मैं झेंपकरकर बोली, “क्या हुआ, तुम लोग इतना चिल्ला क्यों रहे हो? मेरी यहाँ साँस अटकी हुई है और तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है।”

और उधर से आवाज़ आई, “मेरिट लिस्ट में तुम्हारा नाम आ गया है” (उसके बाद के सारे शब्द खुशियों की गूँज में कहीं गुम गए)

यहां मुझे मेरे कोनों पर भरोसा नहीं हो रहा था। क्या सच में मैंने कर दिखाया ? कुछ देर तक तो मैं आश्चर्यचकित खड़ी रही। फिर खुद को संभालते हुए मैं उससे पूछती हूँ, “क्या सच में मेरा ही नाम है, प्लीज एक बार फिर चेक कर ना, तुझे गलतफहमी हो गई हो कहीं !!?”

वह ठहाका लगाते हुए कहता है, “अरे पागल ! मैं कैसे तुम्हारा नाम गलत देख सकता हूँ, मैं शत-प्रतिशत सच बोल रहा हूँ, बाबा रे ! अब तो तुम सरकारी अधिकारी बन गई हो।”

यह सुनते ही मुझे मेरा इंतजार..... बेसब्री से किया हुआ इंतजार, याद आने लगा।

“आँखों को इंतजार की भट्टी पर रख दिया, मैंने दिए को आँधी की मर्जी पर रख दिया।”

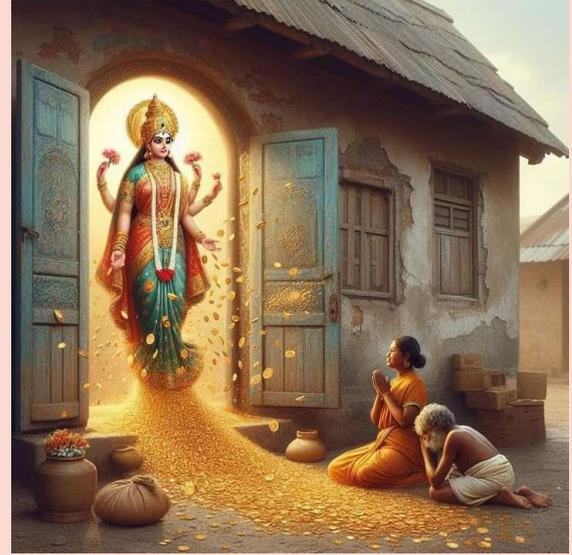
नौकरी हो गई है-यह आवाज़ बार-बार मेरे कानों में गूँज रही थी और आँखों से आसूँओं की धारा बह रही थी। मेरी अंतर्आत्मा चीख चीखकर कहने लगी- मैंने कर दिखाया.... हां मैंने आखिर कर ही दिखाया। शाबाश ऐनी !

मेरी बहन ने बाबा को जगाया और उन्हें भी मेरी नौकरी लगने की खबर दी। मेरे बाबा की खुशियों का तो

ठिकाना ही नहीं रहा। पता नहीं कहाँ से उनमें इतनी फुर्ती आ गई कि वे दौड़ते हुए बाजार गए और मिठाई खरीद लाएं। झटपट मंदिर वाले कमरे में गए और साष्टांग प्रणाम करते हुए दुग्गा मां को भोग भी लगा दिया। पूजा घर के पास दीवार पर टंगी माँ की तस्वीर को भाव-विभोर होकर ऐसे देखने लगे, जैसे बरसों पुराना कोई वादा पूरा हो गया हो। मैं बाबा की ओर बढ़ी और उनका चरणस्पर्श करते हुए आशीर्वाद लिया। भीनी आंखों के साथ बाबा ने मुझे उठाकर गले लगाया और सिसकते हुए बोल पड़े, तुम्हारी माँ सच ही कहती थी...“आमार मेजो खूब आगे जावे। पैसा बचाकर रखिए मझली की नौकरी लगने पर यही पैसे काम आएंगे।”

सच ही कहते हैं कि माँ की दूरदर्शिता और अपनी संतान के सामर्थ्य की समझ का सानी कोई नहीं होता। उसी क्षण मेरी बहन मुझे मिठाई खिलाकर जय दुग्गा मां, जय दुग्गा मां की उद्धोषणा करने लगी। आस-पड़ोस के लोग भी दुग्गा मां की उद्धोषणा सुनकर घर आए और वे भी मेरी परवरिश के क्रसिदे पढ़ने लगे। आज सच में माँ की कमी बहुत महसूस हो रही थी। माँ होतीं तो आज लिपट कर उनसे कहती, “देखी माँ....तेरा संघर्ष और मेरी पढ़ाई रंग लाई।”

मुझे इस बात की बहुत खुशी थी कि आज नौकरी के रूप में मेरे घर स्वयं माँ सरस्वती, देवी लक्ष्मी और प्रभु गणेश साक्षात् पधारे हैं।



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2024



राष्ट्रीय ध्वजारोहण करते हुए श्री एस सुनील राज, प्रधान महालेखाकार



स्वतंत्रता दिवस संदेश देते हुए श्री एस सुनील राज, प्रधान महालेखाकार

कर्मचारियों द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुति



श्री अविनाश नाथ
लेखापरीक्षक

शहरीकरण के कारण प्रदूषण

शहरीकरण, आधुनिक समाज की एक अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसने हमारे जीवन को कई तरीकों से प्रभावित किया है। हालांकि, इसके साथ ही यह कई गंभीर समस्याओं को भी जन्म देता है, जिनमें से एक प्रमुख समस्या प्रदूषण है। शहरीकरण के कारण प्रदूषण का स्तर तेजी से बढ़ रहा है, जो हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन गया है। इस निबंध में, हम शहरीकरण के विभिन्न पहलुओं और इसके कारण होने वाले प्रदूषण के विभिन्न प्रकारों पर विस्तृत चर्चा करेंगे।



शहरीकरण और वायु प्रदूषण:

शहरीकरण के कारण वायु प्रदूषण में भारी वृद्धि हुई है। शहरों में वाहनों की संख्या में वृद्धि, औद्योगिक इकाइयों का विस्तार, और निर्माण कार्यों की बढ़ती संख्या ने वायु गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। वाहनों से निकलने वाला धुआं, फैक्ट्रियों से निकलने वाले रसायन, और निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल वायु को प्रदूषित करते हैं। यह प्रदूषित वायु सांस लेने में कठिनाई, अस्थमा, और अन्य श्वसन संबंधी बीमारियों का कारण बनती है। इसके अलावा, वायु प्रदूषण के कारण हृदय रोग, कैंसर, और अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है।

वायु प्रदूषण के कारण ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन भी हो रहे हैं। ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन, जैसे कि कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन, वायुमंडल में गर्मी को फंसा लेते हैं, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ता है। यह जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र स्तर के बढ़ने, और मौसम के पैटर्न में बदलाव का कारण बनता है। इसके परिणामस्वरूप, प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि होती है, जो मानव जीवन और संपत्ति के लिए गंभीर खतरा बनती है।



जल प्रदूषण:

शहरीकरण के कारण जल प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या बन गया है। शहरों की बढ़ती जनसंख्या और औद्योगिक गतिविधियों के कारण नदियों, झीलों, और अन्य जल स्रोतों में प्रदूषकों का निर्वहन बढ़ गया है। घरेलू और औद्योगिक

अपशिष्ट जल को बिना उपचार के जल स्रोतों में छोड़ दिया जाता है, जिससे जल की गुणवत्ता में गिरावट आती है। यह प्रदूषित जल पीने के लिए असुरक्षित हो जाता है और जल जनित बीमारियों का कारण बनता है। इसके अलावा, जल प्रदूषण के कारण जलीय जीवों की मृत्यु दर में वृद्धि होती है और जल पारिस्थितिकी तंत्र पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

जल प्रदूषण के कारण मछलियों और अन्य जलीय जीवों की प्रजातियों में कमी आ रही है। यह खाद्य श्रृंखला को प्रभावित करता है और मानव स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। प्रदूषित जल का उपयोग कृषि में करने से फसलों की गुणवत्ता में गिरावट आती है और खाद्य सुरक्षा पर भी असर पड़ता है। इसके अलावा, जल प्रदूषण के कारण पर्यटन उद्योग पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि प्रदूषित जल स्रोतों के पास पर्यटकों की संख्या में कमी आती है।



मृदा प्रदूषण:

शहरीकरण के कारण मृदा प्रदूषण भी बढ़ रहा है। शहरों में कचरे का उचित निपटान न होने के कारण मृदा में हानिकारक रसायनों का संचय हो जाता है। इसके अलावा, कृषि भूमि का शहरीकरण के लिए उपयोग करने से मृदा की उर्वरता में कमी आती है। मृदा प्रदूषण के कारण फसलों की गुणवत्ता में गिरावट आती है और खाद्य सुरक्षा पर भी असर पड़ता है। मृदा प्रदूषण के कारण मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है, जिससे कृषि उत्पादन में भी कमी आती है।

मृदा प्रदूषण के कारण मिट्टी की संरचना और बनावट में भी बदलाव आता है। यह मिट्टी की जल धारण क्षमता को कम करता है और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बढ़ाता है। इसके अलावा, मृदा प्रदूषण के कारण मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की संख्या में कमी आती है, जो मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मृदा प्रदूषण के कारण वनस्पतियों और जीवों की प्रजातियों में भी कमी आती है, जिससे जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।



ध्वनि प्रदूषण:

शहरीकरण के कारण ध्वनि प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या बन गया है। शहरों में वाहनों की आवाज, निर्माण कार्यों की ध्वनि, और औद्योगिक गतिविधियों की आवाज ध्वनि प्रदूषण का कारण बनती है। यह ध्वनि प्रदूषण मानसिक तनाव, नींद में कमी, और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। इसके अलावा, ध्वनि प्रदूषण के कारण सुनने की क्षमता में कमी, उच्च रक्तचाप, और हृदय रोग जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं।

ध्वनि प्रदूषण के कारण वन्यजीवों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उच्च ध्वनि स्तर के कारण वन्यजीवों की संचार प्रणाली में बाधा उत्पन्न होती है, जिससे उनके व्यवहार और प्रजनन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके

अलावा, ध्वनि प्रदूषण के कारण वन्यजीवों के आवास में भी बदलाव आता है, जिससे उनकी प्रजातियों की संख्या में कमी आती है। ध्वनि प्रदूषण के कारण मानव और वन्यजीवों के बीच संघर्ष की संभावना भी बढ़ जाती है।



प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन:

शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन भी एक गंभीर समस्या है। शहरों में बढ़ती जनसंख्या और औद्योगिक गतिविधियों के कारण जल, वन, और खनिज संसाधनों का अत्यधिक उपयोग हो रहा है। यह प्राकृतिक संसाधनों की कमी और पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बनता है। जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन जल संकट का कारण बनता है, जबकि वन संसाधनों का अति दोहन वन्यजीवों के आवास को नष्ट करता है और जैव विविधता को खतरे में डालता है।

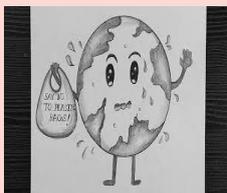
प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन के कारण पारिस्थितिकी तंत्र पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जल संसाधनों का अत्यधिक उपयोग जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बढ़ाता है और जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि होती है। वन संसाधनों का अति दोहन वन्यजीवों के आवास को नष्ट करता है और जैव विविधता को खतरे में डालता है। खनिज संसाधनों का अत्यधिक उपयोग पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बनता है और मानव स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है।



स्वास्थ्य पर प्रभाव:

शहरीकरण के कारण प्रदूषण का स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। वायु प्रदूषण के कारण श्वसन संबंधी बीमारियां, जल प्रदूषण के कारण जल जनित बीमारियां, और मृदा प्रदूषण के कारण खाद्य जनित बीमारियां बढ़ रही हैं। इसके अलावा, ध्वनि प्रदूषण के कारण मानसिक तनाव और नींद में कमी जैसी समस्याएं भी बढ़ रही हैं। प्रदूषण के कारण बच्चों, बुजुर्गों, और गर्भवती महिलाओं पर विशेष रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य सेवाओं पर भी दबाव बढ़ता है। अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में मरीजों की संख्या में वृद्धि होती है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में कमी आती है। इसके अलावा, प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य सेवाओं पर आर्थिक बोझ भी बढ़ता है, जिससे सरकार और समाज पर वित्तीय दबाव बढ़ता है। प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य सेवाओं की मांग में वृद्धि होती है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और पहुंच में भी कमी आती है।



प्रदूषण की समस्या के उपाय

शहरीकरण के कारण प्रदूषण की समस्या को हल करने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। सबसे पहले, वाहनों की संख्या को नियंत्रित करने के लिए सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना चाहिए। इसके अलावा, औद्योगिक इकाइयों में प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों का उपयोग अनिवार्य करना चाहिए। जल स्रोतों में अपशिष्ट जल के निर्वहन को रोकने के लिए जल उपचार संयंत्रों की स्थापना करनी चाहिए। कचरे के उचित निपटान के लिए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को लागू करना चाहिए। ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए ध्वनि अवरोधक उपकरणों का उपयोग करना चाहिए।

सरकार को प्रदूषण नियंत्रण के लिए सख्त नीतियाँ और नियम लागू करने चाहिए। इसके अलावा, जन जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को प्रदूषण के दुष्प्रभावों और इसके नियंत्रण के उपायों के बारे में जानकारी देनी चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य करना चाहिए ताकि बच्चों में पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित हो सके।

प्रदूषण नियंत्रण के लिए नवीनतम तकनीकों का उपयोग भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, वाहनों में इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड तकनीकों का उपयोग करके वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है। औद्योगिक इकाइयों में प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों का उपयोग करके वायु और जल प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अलावा, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए रीसाइक्लिंग और कंपोस्टिंग तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है।

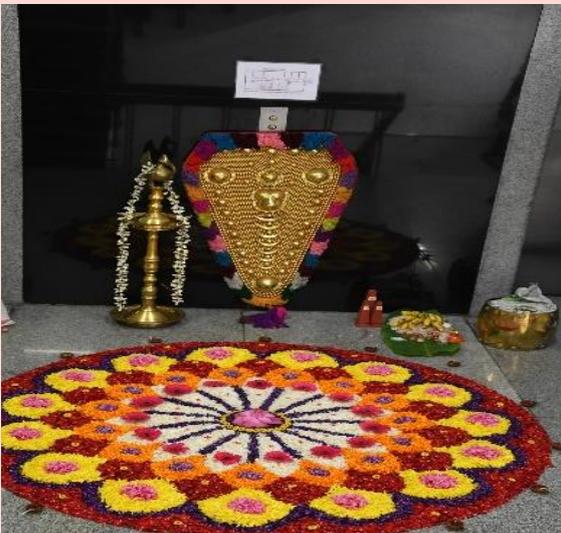
शहरीकरण के कारण प्रदूषण एक गंभीर समस्या है, जो हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए खतरा बन गई है। इसे हल करने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है। हमें अपने जीवन शैली में बदलाव लाना होगा और पर्यावरण संरक्षण के उपायों को अपनाना होगा। केवल तभी हम एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं। शहरीकरण के लाभों को प्राप्त करने के साथ-साथ हमें इसके दुष्प्रभावों को भी नियंत्रित करना होगा ताकि हम एक संतुलित और स्थायी विकास की दिशा में आगे बढ़ सकें।



केरल का राष्ट्रीय त्योहार- ओणम – कुछ झलकियां



कर्मचारियों द्वारा बनाई गई फूलों की रंगोली





हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पानी

जल ही वह कारण है जिससे जीवन का अस्तित्व है और पृथ्वी फलती-फूलती है। पानी हमारे गृह पर जीवन के सभी रूपों का समर्थन करता है। पृथ्वी की सतह का 70% हिस्सा पानी से बना है जिसमें से केवल 3% मीठा पानी मानव उपभोग के लिए है। जल ही वह कारण है जिसके कारण पृथ्वी जीवन का समर्थन कर सकती है और अन्य ग्रह नहीं कर सकते। मानव शरीर का 60% तक पानी से बना है।

जल का उपयोग हम अनेक कार्यों में करते हैं। हमें पीने, खाना पकाने, नहाने और साफ-सफाई के लिए पानी की जरूरत होती है। पौधों और जानवरों को जीवित रहने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। पानी जीवन का एक अनिवार्य घटक है जो किसी को जीवित रहने और ठीक से काम करने में मदद करता है। जल के बिना, ग्रह पर जीवन असंभव होगा। जल पृथ्वी पर नदियों, महासागरों, समुद्रों, तालाबों, झीलों, नदियों और हिमनदों के रूप में पाया जाता है। जल की संरचना पूरी पृथ्वी पर एक समान रहती है। यह पानी ही है जो हमें इस ग्रह पर आरामदायक जीवन जीने में मदद करता है। हमारा शरीर 60% पानी से बना है, इसलिए पानी हमारे लिए एक महत्वपूर्ण यौगिक है।



पानी की बर्बादी से बचें

हमारे दैनिक जीवन में जिन गतिविधियों में हम शामिल होते हैं उनमें से अधिकांश के लिए पानी की आवश्यकता होती है। हमें इसका संरक्षण करना आवश्यक है अन्यथा आने वाले वर्षों में हमारा ग्रह ताजे पानी से रहित हो जाएगा। यहाँ कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे पानी को संरक्षित किया जा सकता है:

- पानी की बर्बादी रोकने के लिए टपकते नलों को तुरंत ठीक करें।

- नहाते समय शावर के प्रयोग से बचें।
- अपने दांतों को ब्रश करते समय अपना नल बंद रखें। जरूरत पड़ने पर ही इसे चालू करें।
- आधे कपड़े धोने के बजाय पूरे कपड़े धोएं। इससे न केवल पानी की बचत होगी बल्कि बिजली की भी काफी बचत होगी।
- बर्तन धोते समय पानी को बहता हुआ न छोड़ें।
- वर्षा जल संचयन प्रणाली का प्रयोग करें।
- गटर की सफाई के लिए पानी की नली का उपयोग करने से बचें। आप इसके बजाय झाड़ू या अन्य तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं।
- खाना बनाते और खाते समय सही आकार के बर्तनों और अन्य बर्तनों का उपयोग करें। अपनी आवश्यकता से बड़े का उपयोग करने से बचें।
- सिप्रंकलर के बजाय अपने पौधों को हाथ से पानी देने की कोशिश करें।
- तालों को ढक दें ताकि बाष्पीकरण के कारण पानी की कमी से बचा जा सके।

निष्कर्ष

हमें पानी को बर्बाद नहीं करना चाहिए और इसके संरक्षण में अपना योगदान देना चाहिए। हमें उन गतिविधियों और योजनाओं का अभ्यास और प्रचार करना चाहिए जो जीवित प्राणियों की वर्तमान और भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए जल संरक्षण और इसके स्रोतों की रक्षा करने में मदद करती हैं।

हमें पानी के महत्व को समझने और इसका बुद्धिमानी से उपयोग करने की आवश्यकता है। जैसा कि हम दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पानी की कमी को देख सकते हैं, इसलिए समय आ गया है कि हम पानी का संरक्षण करना शुरू कर दें। हालाँकि, लोग पानी की कमी से अनभिज्ञ हैं और इस प्रकार इसके परिणामों के बारे में सोचे बिना इस प्राकृतिक संसाधन का दोहन करते रहते हैं। यह भविष्यवाणी की जाती है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा यदि मनुष्य ने इसका विवेकपूर्ण उपयोग करना नहीं सीखा। इसलिए सरकार के साथ एकजुट होने और हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी के संरक्षण के लिए उपचारात्मक उपाय करने और बहुत देर होने से पहले इसका बुद्धिमानी से उपयोग करने के लिए एक घंटे की आवश्यकता है। पानी बचाने के लिए सरकार द्वारा प्रदान किए गए दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए और जिनमें से एक वर्षा जल संचयन है जो पानी बचाने और विभिन्न उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग करने का एक शानदार तरीका है।



सुश्री. आकांशा गहलोट
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कृतज्ञता

सुबह का समय था और सूरज की खिली-खिली धूप खिड़की से कमरे को रोशन कर रही थी। उसी कमरे के कोने में 70 वर्षीय ज्योति चारपाई पर लेटी थी। उसे अजीब सी बेचैनी महसूस हो रही थी। उसे चारपाई से लेटे-लेटे टेबल पर पड़े एक कांच में अपने चेहरे का प्रतिबिंब दिखा। आँखें सूजी हुई थी, त्वचा बेजान और बेरंग हो कर लटक रही थी। बाल तो नामात्र ही रह गए थे। हाथों पैरों में बिस्तर से उठने की ताकत भी ना थी। हर सांस मुश्किल सी लग रही थी। घर में लोग तो थे पर उसके कमरे में कोई न था। गाने सुनने का और फिल्में देखने का पहले बहुत मन होता था पर अब न तो साफ सुनाई देता था न ही आँखों से साफ दिखता था। उसके दिन सन्नाटे को सुनकर और अपने परिवार की धुंधली फोटो को देखकर बीत रहे थे।

इस अकेलेपन ने उसे बहुत समय दिया था बीते पलों को याद करने का। वह याद करती थी कि किस तरह उसके पिता वक्त मिलने पर नए-नए पकवान बनाकर खिलाया करते थे। वह अपने नासमझी के दिनों में अपने पिता को सख्त समझा करती थी। यह समझने में उसे वक्त लगा कि वे जैसे सख्त दिखते थे और जो निर्णय वे परिवार के लिए लेते थे उसमें उनके अंदर छिपा एक परवाह करने वाला पति और पिता था।

उसकी माँ शुरू से ही उसकी सहेली रही थी। वे रसोई में खड़े-खड़े घंटों बातें किया करते थे। ज्योति उन्हें बताती कि उसके कॉलेज में क्या-क्या हुआ, किसने क्या कहा और उसकी माँ बताती थी कि किस रिश्तेदार ने किस रिश्तेदार के बारे में क्या कहा। ज्योति को निडर, मज़बूत और आत्मनिर्भर महिला बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ था। परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने पर भी ज्योति के माता-पिता ने उसे कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी।

घर में एक और दोस्त था, उसका भाई। भाई-बहन की लड़ाइयाँ उसे याद आती थी। ज्योति के लिए वह दोस्त भी था और एक छोटा बच्चा भी। बड़ी बहन वक्त आने पर माँ भी बन जाया करती थी। उसके भाई के अपने परिवार के साथ विदेश चले जाने के बाद राखी पर मिलना भी बंद हो गया था। जब तक उसके शरीर में जान थी, वह खुद राखी लाने बाजार जाया करती थी और उसे पोस्ट किया करती थी। पर अब तो.....

घर में एक और छोटा बच्चा था, उनका पालतू कुत्ता छोटु। छोटु घर का लाड़ला था। ज्योति के पिता जितना प्यार उससे और उसके भाई से नहीं दिखाते थे, उससे ज्यादा वे छोटु से दिखाते थे। घर में कभी किसी को अकेला नहीं महसूस होने देता था। घर के सदस्य से कम नहीं था वो। पुरानी यादें याद करके ज्योति की आँखों में पानी भर आया था। वह सोचने लगी कि काश उसने अपने माता-पिता को गले लगाया होता और उन्हें बताया होता कि वह कितनी भाग्यशाली महसूस करती है उन्हें पाकर। भाई से तो वह आज तक भी बोल नहीं पाई थी। उसने फिर मन बनाया कि भाई को आज किसी से कहकर फोन करवा ही लेती हूँ।

तभी लेटे-लेटे अचानक छाती मे दर्द होने लगा । आवाज लगाने के लिए मुँह ही न खुला । खुद जाकर किसी को बुलाने के लिए खड़ी हुई तो कमजोर पैरों ने साथ न दिया और गिर पड़ी । मुँह के बल गिरी तो छाती का दर्द असहनीय हों गया, उतने में माँ की आवाज कानों मे पड़ी । ‘ज्योति उठ जा नहीं तो बस छूट जाएगी’।

ज्योति ने आँख खोली तो एक पल के लिए उसके चेहरे पर कोई भाव न था, पर जैसे ही उसे एहसास हुआ कि वह मात्र एक सपना था, उसकी सांस मे सांस आई और चेहरे पर एक कृतज्ञता से भरा सुकून छा गया । वह जल्दी से अपने पलंग से उठी और कांच की तरफ दौड़ी । अपने चेहरे को देखकर उसे कभी इतनी खुशी नहीं हुई थी, जितनी की आज हो रही थी । आज उसे कांच में अपने चेहरे मे कमियाँ नहीं दिख रही थी, बस वह त्वचा दिख रही थी जो बोल रही थी कि जीवन अभी बाकी है । उसने अपने हाथों और पैरों को देखा, उस ऊर्जा को महसूस किया जो उसे चलने में, बैठने में, साथ दे रही थी ।

वह दौड़कर अपने कमरे से बाहर गई और अपने पिता को अकबार पढ़ते हुए कॉफी पीते देखकर मुस्कराई और उन्हें गले लगा लिया, फिर चाहे भले ही उसे उनसे कॉफी गिराने के लिए डांट खानी पड़ी हो । फिर जब माँ शोर सुनकर आई तो उसने माँ को भी कसकर गले लगा लिया और भाई को परेशान करने पहुँच गई । भाई के कमरे में जाकर उसके सर पर हाथ फेरकर उसके बाल खराब कर भाग आई इससे पहले की वो उसे पकड़ पाता । घर वालों को समझ नहीं आया कि क्या हुआ था ज्योति को ।

यह सपना ज्योति के लिए एक अनुस्मारक की तरह था कि यह वक्त फिर नहीं आएगा । जो लोग आज उसके साथ है, उसके पास है, वे हमेशा नहीं रहेंगे । उसका समय सीमित है और उसका शरीर नश्वर है । इस सपने ने उसका जीवन को देखने का नजरिया ही बदल दिया । उसने यह निश्चय किया कि वह अपने जीवन में सदैव सकारात्मक और दयालु रहेगी । उसका हृदय कृतज्ञता से भर गया था ।





श्री. मणिकंठन वी.के,
सहायक पर्यवेक्षक



भगवद्गीता की सीख

जीवन के 10 महत्वपूर्ण सबक जो भगवद गीता सिखाती है.

आपने जो खोया है उसके लिए आप दुखी क्यों हैं?

"क्या आप कुछ भी लाए थे जो खो गया था?"

"क्या आपने कुछ ऐसा बनाया जो शापित था?"

"आपने जो कुछ भी हासिल किया है वह वही है जो आपको यहां से मिला है।

"आपको वह सब कुछ मिल गया है जो आपको यहाँ से मिला है। आज आपके पास जो कुछ भी है वह कल किसी और का था।

"कल यह किसी और का होगा। परिवर्तन प्रकृति का नियम है।

जिस व्यक्ति ने भगवद्गीता का अध्ययन किया है वह अपने जीवन में कभी भी अपनी शांति नहीं खोएगा। उन्होंने कहा, 'हम भी भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को दी गई शिक्षाओं को अपने जीवन में दोहरा सकते हैं।

1. "किसी भी चीज से डरो मत"

अगर हम पूछें कि मनुष्य का सबसे बड़ा भय क्या है, तो हम उत्तर देंगे "मृत्यु" का। गीता में भगवान कृष्ण अपने भक्त और मित्र अर्जुन को मृत्यु से भी नहीं डरने की बात कहते हैं। "मौत केवल एक गुजर रही है। मृत्यु केवल नश्वर व्यक्ति के लिए होती है। लेकिन शाश्वत के लिए कोई मृत्यु नहीं है। एक साधारण आदमी, एक सैनिक, या एक नेता कभी भी अपने धन, अपनी स्थिति या अपनी मृत्यु से नहीं डरता। दुनिया से सब कुछ, रिशतों और धन से, नश्वर है। डर के बिना, जीवन सामान्य से अधिक सुंदर होगा।

2. "किसी भी चीज पर संदेह न करें"

तर्कहीन संदेह सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक है जो इस ब्रह्मांड में रहते हुए मनुष्य की शांति और खुशी को छीन लेता है। एक संशयवादी व्यक्ति इस दुनिया में या आने वाले जीवन में शांति से नहीं रह सकता। उसी समय, खुद को खोजने की जिज्ञासा को संदेह के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। दार्शनिकों के सुझावों और विद्वानों के शब्दों को अस्वीकार न करें।

3. व्यक्तिपरकता से छुटकारा पाएं

सांसारिक जीवन में उत्पन्न होने वाले सभी प्रकार के जुनून से छुटकारा पाएं। जब हम सभी प्रकार की चीजों से मुक्त होते हैं जो गिनती के अंत में नहीं होते हैं, जैसे कि वासना, क्रोध आदि, तो हमारा मन शांति प्राप्त कर सकता है। एक शांत मन ज्ञान, शांति और मन की शांति प्राप्त कर सकता है।

4. परिणाम क्या होगा, इसके बारे में मत सोचो

जब आप कुछ करने का फैसला करते हैं, तो इस बारे में मत सोचो कि इनाम क्या होगा। जो काम हममें निहित है, उसे ईमानदारी और सटीकता से करें।

5. कर्म पथ से दूर न रहें

आपको जो करना है उससे शर्माएं नहीं। किए जाने वाले कार्यों से भागना कभी भी आगे बढ़ने का रास्ता नहीं है। पारिवारिक संबंधों को त्यागना और मित्रता को छोड़ना कभी भी आत्मिक ज्ञान या शाश्वतकालीन शान्ति का मार्ग नहीं है। सांसारिक दुनिया में रहते हुए जीवन की परिस्थितियों से भागना आसान नहीं है। उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारियों को पूरी लगन के साथ निभाएं। यदि किसी के पास ऐसा मन है जो सब कुछ सांसारिक त्यागने के बावजूद भटकता है, तो यह उसकी विफलता है।

6. परम्परा को पहचानो

यदि हम सभी सांसारिक बंधनों और बंधनों के प्रति समर्पण करने में सक्षम हैं, तो हम सर्वोच्च को प्रस्तुत कर सकते हैं। हर इंसान भगवान की करतूत है। अतीत को दोष देना और भविष्य से डरना व्यर्थ है। मन और आत्मा का सुख सर्वव्यापी ईश्वर की पहचान है।

7. "यदि आप स्वार्थी हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके पास ज्ञान है।

जब हम दर्पण में देखते हैं, तो हम प्रतिबिंब देख सकते हैं। यदि दर्पण स्पष्ट है, तो छवि भी स्पष्ट होगी। हालांकि, अगर दर्पण स्पष्ट नहीं है, तो छवि धुंधली हो

जाएगी और स्पष्ट नहीं होगी। एक स्वार्थी व्यक्ति को अपने स्वभाव के कारण हर दिन समस्याएं होंगी।

8. हर चीज के साथ संतुलित रहें

एक व्यक्ति जो ध्यान में ध्यान केंद्रित करने में असमर्थ है, वह अपनी दैनिक गतिविधियों में संयम नहीं बरत सकता है। बहुत अधिक खाना या कुछ भी नहीं खाना आपको परमेश्वर के करीब नहीं लाता है या आपको परमेश्वर से दूर करने का कारण नहीं बनता है। जो व्यक्ति ध्यान का अभ्यास करता है वह सभी दुखों को दूर कर सकता है। सही नींद लेने और सही खाना खाने की आदत डालें।

9. क्रोध त्रुटि का मार्ग है; शांत रहें

क्रोध वास्तव में एक आदमी को बेवकूफ बनाता है। जब क्रोध बेकाबू हो जाता है, तो अच्छे और बुरे को पहचानने का ज्ञान खो जाता है। साथ ही आप चीजों के बारे में सोचने की क्षमता भी खो देंगे। क्रोध मनुष्य के जीवन में सभी प्रकार की असफलताओं का मूल कारण है। क्रोध नरक के तीन मुख्य द्वारों में से एक है। वासना और लोभ अन्य दो द्वार हैं। यदि वह अपने क्रोध को नियंत्रित कर सकता है, तो वह शांति पा सकता है।

10. शरीर नश्वर है; आत्मा शाश्वत है।

भगवद गीता में, भगवान कृष्ण ने मानव शरीर की तुलना कपड़े के टुकड़े से की है। मानव शरीर और आत्मा पुराने कपड़ों को नए कपड़ों से बदलने की तरह हैं।

"मृत्यु केवल शरीर को होती है और आत्मा की कोई मृत्यु नहीं होती है।



निहिता साईकुमार
सुपुत्री श्री जे ए साई कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बिना किसी मूल्य

आप एक कमीज लीजिये दूसरी मुफ्त ! जी हां मुफ्त! बिलकुल मुफ्त ! आप दो कुर्ते खरीदेंगे तो, दो और मुफ्त । वो भी बिना किसी मूल्य, एकदम मुफ्त । इस तरह के इश्तेहार हमेशा हर इंसान को आम तौर पर नज़र आते रहते हैं, और तो और मोबाइल में सन्देश भी मिलते रहते हैं ।

कई सदियों पहले की एक कहानी है । एक सज्जन कुछ काम से घर से निकलने से पहले अपनी पत्नी सीतालक्ष्मी से कह कर जाते हैं कि चार सेर तिल धो कर सुखा के रखने के लिए । पति का आदेश मान कर पत्नी ने तिल धोकर धुप में सुखाने के लिए रख दिया । थोड़ी देर बाद उनका बेटा आकर कर बताता है कि एक कुत्ते ने सारे तिल गंदे कर दिए हैं और अब वे तिल इस्तेमाल के लायक नहीं रह गए हैं । सीतालक्ष्मी घबरा गयी । सोचने लगी कि जब उसके पति घर वापस आएंगे तो वह क्या जवाब देगी । थोड़ी देर के लिए उसका मन अशांत हो गया । फिर उसे एक उपाय सुझा । क्यूं ना सारे तिल का विनिमय कर ले, यानी सारे तिल को कम कीमत में देकर उसके बदले कोई दूसरा उपयोगी किराने का सामान ले ले । सीतालक्ष्मी ने अपने पड़ोस में रहने वाली बुद्धिमती नाम की महिला के सामने विनिमय के समझौते का प्रस्ताव रखा । बुद्धिमती को पहले तो सौदा ठीक लगा । मगर वह सोचने लगी कि इतने कम दाम में तिल मिलना, क्या

यह तिल सही है । काफी सोचने के बाद उसने अस्वीकार कर दिया ।

ये बात तो सदियों पुरानी है , शायद तीन या चार सौ साल पुरानी । उस ज़माने के लोग ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं होते थे मगर बुद्धिमान हुआ करते थे । ज़रूरत से ज्यादा या असामान्य व्यापार प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते थे । आज का ज़माने में हर घर में एक स्नातकोत्तर या अभियंता मिलेगा । फिर भी बुनियादी सामान्य ज्ञान शून्य है । बस कहने के लिए हाथ में डिग्री है । लेकिन बुद्धि घुटनों में है । एक बार सामान खरीदने के बाद, धोखा या घाटा होने पर मालूम चलता है कि कौन बुद्धिमान है और कौन बकरा बन रहा है । बकरा भी कुछ हद तक अपनी बुद्धि और समझ का उपयोग करता है और सावधानी से जीता है । कुछ मूर्ख लोगों की जानवर से तुलना करके जानवर का अपमान नहीं कर सकते ।

एक कमीज अगर सौ की है, तो भी व्यापारी खूब लाभ उठा रहा है । उस के बाद भी एक पर एक जोड़ कर बेच कर भी मुनाफा कमाता है ।

कुछ दीवाने ऐसा भी है । कैसे ? जो व्यापार-चिह्न या (ट्रेडमार्क) और छाप या ब्रांड प्यार करते हैं । इस चीज़ का अलग ही दीवानापन है । बिना व्यापार चिह्न या कम-दाम के कपड़े पहनने पर शान में कोई फर्क नहीं आएगा । (यह नहीं मालूम चलेगा कि आप गरीब हैं ।) यह मत भूलिए कि आपका भी एक परिवार है । समाज को प्रभावित करना उतना ज़रूरी नहीं कि जितना अपने परिवार का पाल-पोषण करना ।

दूकानदार लालच दिखाकर, पुराने कपड़ों के बदले में नए कपड़े खरीदने पर पचास प्रतिशत का छूट या सत्तर प्रतिशत का छूट बोलेंगे । गिराक मन्त्र मुग्ध होकर घर में जितने भी सारे कितने भी पुराने कपड़े हैं, उसे उठाकर उसके बदले में नए कपड़े घर ले आते हैं और कहते हैं कि बीस हजार के मूल्य के कपड़े सिर्फ पांच हजार में मिला है, वो भी पुराने कपड़े देने

पर। वास्तव में उन नए कपड़ों का मूल्य सिर्फ पांच हजार या उस से भी कम होगा। बाकी का पूरा चालाकी, चाल, धोका वगैरह वगैरह।

कुछ विज्ञापन और इशतेहार ऐसे भी होते हैं जिनकी वजह से हमें लगता है कि हम सुन्दर नहीं हैं और इस लेप को खरीद कर इस्तेमाल करने पर शायद सुन्दर बन जाएंगे। हमारा खुद पर भरोसे और विश्वास को तोड़ने पर मजबूर कर देते हैं।

कोई भी व्यापारी कितनी भी कठिन परिस्थिति हो, पर घाटे का सौदा नहीं करेगा। सौ के जगह कम से कम बीस का लाभ तो उठाएंगे। कुछ वस्तुओं, घरेलू सामानों या वस्त्रों की एक समय के बाद उनकी गुणवत्ता घट जाती है। कपड़े फीके पड़ जाते हैं। इनकी आयु ज्यादा दिन की नहीं होती। इस तरह की सामग्री व्यापारी रियायती मूल्यों पर बेचते हैं। कुछ ग्राहक इसे समझदारी समझ कर खरीद लेते हैं। काफी बार तो पहले ही दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। कई बार यह समझ में नहीं आता कि ये नादानी है या बेवकूफी है।

जितनी पढ़ाई की है उसकी दुगनी बुद्धिमती और चातुर्य भी होना चाहिए। चूहा हमेशा जाल में फस कर अपने आप को उलझन के हवाले कर देता है। क्योंकि, उसकी समझ से परे है कि बाहर क्या लाभ मिल रहा है। वह असल में लाभ नहीं लोभ है।



दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

ध्वनि प्रदूषण किन कारणों से होता है?

ध्वनि प्रदूषण उसे कहा जाता है, जब ध्वनि की क्षमता एक सीमा से ज्यादा हो जाती है, उदाहरण के लिए गाड़ियों, डिजे, और कारखानों की तेज आवाजें

ध्वनि प्रदूषण क्या है, इसके कारण और प्रभाव क्या है, और इसके समाधान क्या है। आज के समय में ध्वनि प्रदूषण के प्रति जागृत होना बहुत ज़रूरी है।

ध्वनि प्रदूषण आज के समय की काफी बड़ी समस्या है। आज दुनिया के विकास के साथ-साथ ध्वनि प्रदूषण की समस्या भी बढ़ती जा रही है, जिसे रोकना बहुत ज़रूरी है।

। वर्तमान समय में ध्वनि प्रदूषण के मुख्य कारण हैं- सड़कों पर यातायात, मशीनरी, औद्योगिक क्षेत्र और जनसंख्या वृद्धि।

डेसिबल ध्वनि का माप है। पत्तों की सरसराहट (20-30 डेसिबल) या गरजना (120 डेसिबल) ये सभी ध्वनियाँ जो प्राकृतिक वातावरण में स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती हैं। यदि कोई व्यक्ति ऐसी ध्वनि सुनता है जिसका डेसिबल स्तर 85 डेसिबल या उससे अधिक तक पहुँचता है, तो उसके कान क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। घास काटने की मशीन (90 डेसिबल), ट्रेन (90 से 115 डेसिबल), और रॉक कॉन्सर्ट (110 से 120 डेसिबल) की आवाज़ें कुछ ऐसे परिचित स्रोत हैं जो इस सीमा से अधिक हैं।

ध्वनि प्रदूषण



वन्यजीव और समुद्री जीवन पर प्रभाव

ध्वनि प्रदूषण ऐसी हानिकारक ध्वनि स्तर को कहा जाता है, जब मनुष्यों व जानवरों से सहन नहीं हो पाता है। यह सभी जीव जंतुओं के लिए एक गंभीर समस्या है। शोर युक्त वातावरण न केवल जमीन पर रहने वाले जानवरों को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि यह समुद्र में जानवरों के लिए भी बदतर हो रहा है। जहाजों, ड्रिलिंग उपकरणों, सोनार और भूकंपीय सर्वेक्षणों के कारण एक बार शांत समुद्री वातावरण शोर और अराजक हो गया है। ध्वनि प्रदूषण हमारे शांतिपूर्ण जिंदगी को प्रभावित करता है, और मानसिक तनाव, सुनने की क्षमता में कमी, नींद की कमी जैसी कई स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं पैदा करती है। लगातार ध्वनि प्रदूषण का सामना करने वाला व्यक्ति स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना शुरू कर सकता है और दीर्घ अवधि में खतरनाक हो सकता है। कई अप्रिय शोर विकर्षण जीवन में बाद में समस्याएं ला सकते हैं।

ध्वनि प्रदूषण को रोकने के उपाय

हमें मिलकर ध्वनि प्रदूषण को रोकने का प्रयास करना होगा, अन्यथा कई गंभीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं। ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए हमें सरकार द्वारा बनाए गए ध्वनि प्रदूषण से संबंधित नियमों का पालन करना चाहिए। इसके अलावा हम शोर करने वाले स्रोतों के उपयोग को बंद कर सकते हैं और अन्य लोगों को भी ध्वनि प्रदूषण से बचने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव को कम करने के लिए सरकार और लोगों द्वारा कई उपाय किए गए हैं। कई घरों में अब ध्वनिरोधी दीवारें और खिड़कियां लगाई जा रही हैं। शहरों में कई फ्लाईओवरों में शोर के स्तर को नीचे लाने के लिए ध्वनिरोधी दीवारें होती हैं जो चलने वाले वाहनों से पास के निवासी के लिए होती हैं। जिम्मेदार नागरिकों के रूप में, हमें ध्वनि प्रदूषण को कम करने में योगदान देना चाहिए। बेवजह हॉर्न बजाने पर रोक लगानी चाहिए और अधिकारियों को ऐसा करने वालों पर भारी जुर्माना लगाना चाहिए। अस्पताल और स्कूल साइलेंट जोन में बनाए गए हैं।

रिहायशी और संवेदनशील इलाकों में शोर से बचने के नियम होने चाहिए। ध्वनि प्रदूषण से स्वास्थ्य को होने वाले नुकसान के प्रति लोगों को जागरूक होने की जरूरत है।

ध्वनि प्रदूषण को कम करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक, अधिक से अधिक पौधे लगाना है। पेड़ लगाने की यह प्रक्रिया ध्वनि के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने को कम करने में मदद कर सकती है।

ध्वनि प्रदूषण पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर समस्या है, जिसे कम करना बहुत जरूरी है। इस प्रदूषण को हम निम्नलिखित तरीकों से कम कर सकते हैं।

1. गाड़ियों का कम से कम इस्तेमाल करें, और साइलेंसर उपयोग में ले।

2. शोर कम करने वाले उपकरणों का उपयोग करें।
3. ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण के लिए कानूनी नियमों का पालन करें।
4. ध्वनि अवरोधकों का इस्तेमाल करें, जैसे- दिवारें, बाड़ और पैधे।
5. ध्वनि प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करें।

उपसंहार

ध्वनि प्रदूषण काफी बड़ी समस्या बन चुका है जो दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अगर इस प्रदूषण को रोका नहीं गया तो यह सभी जीवों को काफी भारी नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए हम सभी को मिलकर ध्वनि प्रदूषण को कम करना होगा और इसके लिए हमें सरकार द्वारा बनाए गए नियमों का सही ढंग से पालना करना होगा। अंतिम उद्देश्य बेहतर पर्यावरण के लिए ध्वनि प्रदूषण को कम करना है।

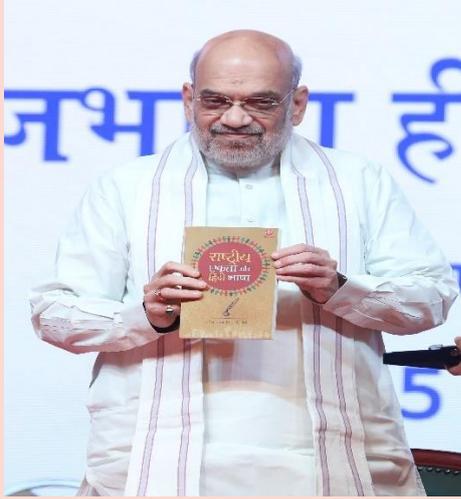
हिन्दी दिवस 2024 एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, भारत मंडपम, नई दिल्ली

हिन्दी दिवस को पूरे देश में मनाए जाने का गृहमंत्री अमित शाह द्वारा वर्ष 2019 में जाहीर किए गए सपने को पूर्णता प्रदान करते हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों का शुभारंभ 2021 में किया गया था। 13 से 14 सितंबर 2021 को वाराणसी में अथश्री किए गए इस उत्सव के द्वितीय अभिव्यक्ति वर्ष 2022 में गुजरात के सूरत शहर में और तीसरी अभिव्यक्ति वर्ष 2023 में महाराष्ट्र के पुणे में देश भर के हजारों प्रतिभागियों के उपस्थिति में साकार हुए।

हिन्दी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन- 2024, देश की राजधानी नई दिल्ली के प्रगति मैदान में स्थित भारत मंडपम में शानदार रूप से आयोजित किया गया। हिन्दी के इस महोत्सव में राजभाषा के प्रति अपने प्यार और ममता अभिव्यक्त करते हुए देश के कोने-कोने से

केंद्र सरकारी संस्थाओं, उपक्रमों, बैंकों आदि में राजभाषा हिन्दी से जुड़े कार्यों को सम्पन्न करने का दायित्व निभाने वाले हिन्दी अधिकारियों एवं कर्मचारियों और साथ ही अन्य भारतीय भाषा के विद्वानों ने बड़ चढ़कर भाग लिया और विभिन्न सत्रों में हुए चर्चाओं के दौरान हिन्दी के महत्व से लेकर अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी की अटूट संबंध जैसे कई प्रासंगिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र दिनांक 14.09.2024 को 10 बजे प्रारंभ किया गया जिसमें माननीय गृहमंत्री श्री अमित शाह ने अध्यक्षता ग्रहण की और माननीय गृह राज्य मंत्रीगण श्री नित्यानंद राय और श्री बंडी संजय कुमार भी अपनी उपस्थिति एवं बहुमूल्य भाषणों से अवसर की शोभा बठायी।





गृह मंत्री महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान तमाम भारतीय भाषाओं की उन्नति के साथ हिन्दी को राष्ट्र की संपर्क भाषा बनाने का सरकार की नीति पर प्रकाश डाली और व्यक्ति के सोचने की, तर्क की और विश्लेषण की भाषा होने के नाते मातृभाषा को प्राथमिक शिक्षा का बुनियाद बनाने की नई शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण लक्ष्य का याद दिलाया। देश के स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में उन्होंने कहा कि सन् 1857 के आंदोलन का विफल होने का प्रमुख कारण भी संपर्क भाषा की न होना था। भारत के बहुसांस्कृतिक स्वरूप की एकता में भारत की भाषाओं के योगदान पर भी उन्होंने जोर दिया और महात्मा गांधी, डॉ भीमराव अंबेडकर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, के एम मुंशी जैसे हिन्दी के प्रगति के लिए काम करने वाले नेताओं को याद करते हुए कहा कि इनमें से कोई भी हिन्दी भाषी नहीं थे। गृह मंत्री ने उद्घाटन सत्र के दौरान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय भाषा विभाग की स्थापना का लोकार्पण किया। उन्होंने सत्र के दौरान राजभाषा के कार्यान्वयन में अहम योगदान देने वालों को 'राजभाषा कीर्ति' और 'राजभाषा गौरव' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गृह मंत्री राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर विशेष रूप से तैयार किए गए 'राजभाषा हीरक जयंती विशेषांक' एवं 'राजभाषा भारती' के हीरक जयंती विशेषांक का लोकार्पण भी किया। श्री अमित शाह ने हीरक जयंती को यादगार बनाने के लिए एक स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्के का लोकार्पण भी किया।

सम्मेलन के पहले दिन के दूसरे सत्र भी अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक साबित हुआ। अपराह्न की शुरुआत 'राजभाषा हीरक जयंती : विगत 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति' विषय पर चर्चा के साथ हुआ। राज्य सभा के उप सभापति श्री हरिवंश, राज्य सभा के संसद सदस्य डॉ. सुधांशु

त्रिवेदी और पूर्व गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा ने इस विषय पर अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए। इस सत्र की आखिरी घंटों को मनोरंजक बनाया मशहूर कवि डॉ. कुमार विश्वास ने, जिन्होंने 'भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिन्दी' विषय को अपने सुंदर कविताओं में लपेटकर इतनी रोचक प्रकार से प्रस्तुत किया कि कुछ ही क्षणों में भारत मंडपम में बैठे सभी दर्शकों के स्वर एक बनकर उनके साथ गाने लगे।

सम्मेलन के द्वितीय दिन, 15 सितंबर 2024, भी पहले दिन की भांति अति-ज्ञानदायी एवं दिलचस्प रहा। पूर्वाह्न के सत्र की शुरुआत 'भाषा शिक्षण में शब्दकोश की भूमिका एवं देवनागरी लिपि का वैशिष्ट्य' विषय में चर्चा के साथ हुआ जिसमें प्रोफ. विमलेश कांति वर्मा, केरल विश्वविद्यालय के प्रोफ. तंकमणी अम्मा जैसे भाषाविद; वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रोफ गिरीश नाथ झा; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का निदेशक प्रोफ सुनील बाबू राव कुलकर्णी और बेंगलुरु से लेखक एवं शिक्षाविद इसपाक अली ने अपने विचार व्यक्त किए। हमारे लिए गर्व की बात है कि मंच पर केरल को प्रतिनिधित्व करने वाले प्रोफ. तंकमणी अम्मा के विचारों को काफी उत्सुकता से दर्शकों ने अपनाया। इसके पश्चात 'तकनीक के दौर में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में "नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति" का योगदान' विषय पर हुई सत्र में नराकास के कार्यो को और प्रभावी बनाने हेतु विचारों पर मंथन हुआ और माननीय केंद्र गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय, कोलकत्ता (दक्षिण) के प्रधान आयकर आयुक्त डॉ. अम्लान त्रिपाठी, पंजाब नैशनल बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल एवं इंडियन ओवरसीस बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अजय कुमार श्रीवास्तव ने विचार व्यक्त किए। सम्मेलन के आखिरी सत्र में भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक

सुरक्षा संहिता 2023 एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 पर चर्चा हुई। हिंदी भाषा के प्रचार में भारतीय सिनेमा के योगदान पर प्रकाश डालते हुए अभिनेता श्री अनुपम खेर और फिल्म निर्माता एवं निदेशक श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने अभिप्राय व्यक्त किए, सभा ने भारी तालियों से स्वीकार किया और उत्सव के समापन में लोगों के दिल में अगली राजभाषा सम्मेलन हेतु शुभ प्रतीक्षाएं भी जगा दिया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह -2024 – केरल

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2024 के सिलसिले में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) एवं महालेखाकार(ले व ह), केरल के कार्यालयों के संयुक्त तत्वाधान में मुख्य कार्यालय तिरुवनंतपुरम एवं शाखा कार्यालय, कोट्टयम, कोच्ची, तृशूर एवं कोषिकोड में हिंदी पखवाड़ा समारोह 2024 शानदार रूप से मनाया गया। दिनांक 17.09.2024 को मुख्य कार्यालय एवं शाखा कार्यालयों के सभी अनुभागों में पूर्वाह्न 11.00 बजे राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई और दिनांक 18.09.2024 से 23.09.2024 तक मुख्य कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में, दिनांक 18.09.2024 से 20.09.2024 तक शाखा कार्यालय तृशूर में; 19.09.2024 को शाखा कार्यालय कोट्टयम में, 20.09.2024 को शाखा कार्यालय एर्णाकुलम में और 23.09.2024 को शाखा कार्यालय कोषिकोड में प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम पुरस्कार को ₹3000/-, द्वितीय पुरस्कार को ₹2500/- और तृतीय पुरस्कार को ₹2000/-की दर पर नकद पुरस्कार भी दिए गए।



मुख्य कार्यालय तिरुवनंतपुरम में दिनांक 18.09.2024 से 23.09.2024 तक हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस दौरान मुख्य कार्यालय में निबंध लेखन, टिप्पण एवं आलेखन, प्रशासनिक हिंदी, अनुवाद, कथा रचना, कविता रचना, सुलेखन, वर्णानुक्रम, पोस्टर डिजाइनिंग, कविता पाठ, आशुभाषण, प्रश्नोत्तरी एवं समूह गान प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। समूह गान प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने 5-5 लोगो का समूह बनाकर सुंदर - सुंदर गीत प्रस्तुत किए। हिंदी गीत एकल (पुरुष एवं महिला) प्रतियोगिता में भी भागीदारी अच्छी रही, सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। दि.24.09.2024 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से अपराह्न 12.30 बजे तक राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

27 सितंबर को पूर्वाह्न 3.00 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह में सुश्री अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) सभा के अध्यक्ष रहे। सुश्री पी एच षेबा, उप महालेखाकार/प्रशा. (लेखापरीक्षा II) के स्वागत भाषण के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ। तदुपरांत भारत के आदरणीय गृह मंत्री का विडिओ संदेश का प्रस्तुतीकरण किया।



हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सुश्री अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार एवं उप महालेखाकार/प्रशा. द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। श्री डानिष के, उप महालेखाकार/प्रशा. (लेखापरीक्षा I) ने हिंदी पखवाड़ा 2024 के सफल आयोजन में सहयोग देने वाले अधिकारियों / कर्मचारियों को धन्यवाद अर्पित किया।



हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के तहत पुरस्कार प्राप्त पदाधिकारीगण



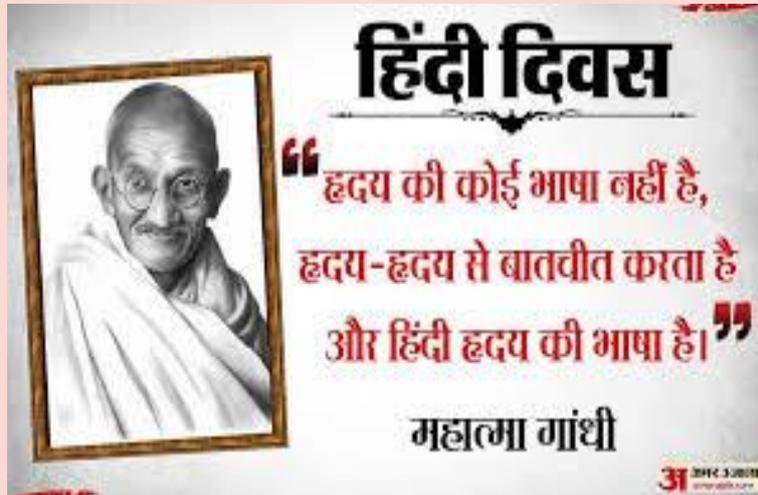
सुश्री सौम्या पी वी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्रथम पुरस्कार



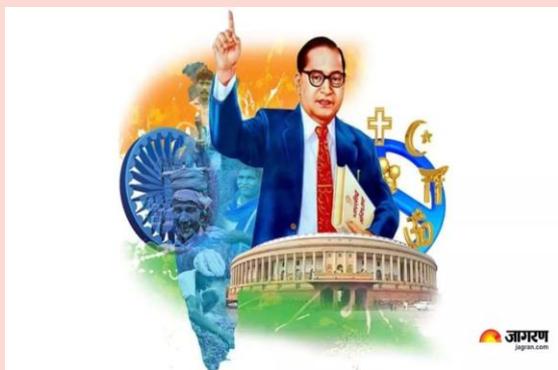
श्री अंकित सिंह
लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार



श्री रहीम अबूतालिब
लेखापरीक्षक
तृतीय पुरस्कार



भीमराव आम्बेडकर जी की जीवनी



भीमराव रामजी आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को ब्रिटिश भारत के मध्य प्रांत (मध्य प्रदेश) में स्थित महू नगर सैन्य छावनी में हुआ था। उनके पिता का नाम सूबेदार “रामजी मालोजी सकपाल” था और उनकी माता का नाम “भीमाबाई” था। भीमराव आम्बेडकर उनकी चौदहवीं (14 वीं) सन्तान थे। उनका परिवार कबीर पंथ को माननेवाला मराठी मूल का था और वे वर्तमान महाराष्ट्र के रातनागिरी जिले में आंबडवे गाँव के निवासी थे। वे हिन्दू ‘महार’ जाती से संबंध रखते थे, जो तब अछूत जाति के अन्तर्गत मानी जाती थी। जिसके कारण भीमराव आम्बेडकर और उनके परिवार को बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। जैसे – (i) समाज में रहने के लिए उच्च जाति के लोगों के लिए अलग स्थान था और निम्न या अछूत जातियों के लोगों के लिए समाज से अलग रहने की व्यवस्था थी। (ii) निम्न जाति के लोगों के लिए अलग कुआँ या पानी की व्यवस्था थी। वे उच्च जाति के लोगों के कूँ से पानी नहीं ले सकते थे। (iii) शिक्षा के लिए भी उच्च और अछूत जातियों की अलग-अलग व्यवस्था थी। अछूत जाति के लोग विद्यालयों में नहीं पढ़ सकते थे।



श्रीमती सुनीता कुमारी
पत्नी श्री शशि कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अगर पढ़ना हो तो कक्षा के बाहर बैठकर पढ़ना पड़ता था। वे उच्च जाति के बच्चों के साथ या बराबर बैठ कर नहीं पढ़ सकते थे। अछूत जाति के बच्चों का जमीन पर कक्षा के बाहर बैठ कर पढ़ाना, और इसी प्रकार के अन्य समाजिक आडंबरों का भीमराव आम्बेडकर जी ने सामना किया था। जिसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। जिस कारण से वे बचपन से ही समाज की इन कुरीतियों का कड़ा विरोध करते आए थे। भीमराव आम्बेडकर के पूर्वज लंबे समय से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्यरत रहे थे और उनके पिता रामजी सकपाल, भारतीय सेना की महू छावनी में सूबेदार के पद पर थे। उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में औपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी।

अपनी जाति के कारण बालक भीम को समाज से काफी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा था। वे विद्यालय में हर विषय में अक्ल होने के बावजूद भी उन्हें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। 7 नवंबर 1900 को रामजी सकपाल ने “सतारा” की गवर्नमेंट हाईस्कूल में अपने बेटे भीमराव का नाम भिवा रामजी आंबडवेकर दर्ज कराया। उनके बचपन का नाम ‘भिवा’ था। आम्बेडकर का मूल उपनाम सकपाल की बजाय आंबडवेकर लिखाया था, जो कि उनके आंबडवे गाँव से संबंधित था। क्योंकि कोकण प्रांत के लोग अपना उपनाम गाँव के नाम से रखते थे। बाद में एक देवरूखे ब्रह्मण शिक्षक कृष्णा केशव आम्बेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे, उन्होंने उनके नाम से

‘आबंडवेकर’ हटाकर अपना सरल ‘आम्बेडकर’ उपनाम जोड़ दिया। जिस कारण से तबसे आज तक वे आम्बेडकर नाम से जाने जाते हैं।

रामजी सकपाल परिवार के साथ बम्बई चले आये। भीमराव जब 15 वर्ष के थे तो उनकी शादी नौ साल की लड़की रमाबाई से करा दी गई थी। तब वे पाँचवी अंग्रेजी कक्षा में पढ़ रहे थे। यह विवाह 1906 में हुआ था, उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था।

शिक्षा

आम्बेडकर जी की प्राथमिक शिक्षा सतारा नगर में राजवाड़ा चौक पर स्थित शासकीय हाईस्कूल में हुई थी। उन्होंने 7 नवंबर 1900 को अंग्रेजी की पहली कक्षा में प्रवेश लिया था। इसी दिन से उनके शैक्षिक जीवन का आरम्भ हुआ था, इसलिए 7 नवंबर को महाराष्ट्र में “विद्यार्थी दिवस” के रूप में मनाया जाता है। जब उन्होंने अंग्रेजी चौथी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की थी, तब यह अछूतों के लिए असामान्य बात थी, इसलिए भीमराव की इस सफलता को अछूतों के बीच सार्वजनिक समारोह के रूप में मनाया गया था, और उनके परिवार के मित्र एवं लेखक दादा केलूसकर द्वारा स्वलिखित ‘बुद्ध की जीवनी’ उन्हें भेंट में प्राप्त हुई। जिसे पढ़कर उन्होंने पहली बार ‘गौतम बुद्ध व बौद्ध धर्म’ को जाना एवं उनकी शिक्षा से प्रभावित हुए।

भीमराव की माध्यमिक शिक्षा एल्किंस्टोन रोड पर स्थित शासकीय हाईस्कूल में 1897 में हुई थी। 1907 में, उन्होंने अपनी मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और अगले वर्ष बॉम्बे विश्व विद्यालय में प्रवेश किया। इस स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले वे अपने समुदाय से पहले व्यक्ति थे। 1912 तक, उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान में कला स्नातक (बी.ए.) प्राप्त की और 1913 में, आम्बेडकर 22 वर्ष की आयु में संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए जहाँ उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की। उन्हें बड़ौदा राज्य की ओर से तीन वर्षों तक प्रतिमाह 11.50 डॉलर छात्रवृत्ति प्रदान की

जाती थी। जून 1915 में उन्होंने अपनी कला स्नातकोत्तर (एम. ए.) की परीक्षा पास की। उन्होंने प्राचीन भारतीय वाणिज्य (एन्शंट इंडियन कॉमर्स) विषय पर शोध कार्य प्रस्तुत किया।

आम्बेडकर जॉन डेवी और उनके लोकतंत्र पर काम से प्रभावित थे। अक्टूबर 1916 में ये लंदन चले गये और वहाँ उन्होंने ‘ग्रेज इन’ में बैरिस्टर कोर्स (विधि अध्ययन) के लिए प्रवेश लिया और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में भी प्रवेश लिया जहाँ उन्होंने अर्थशास्त्र की डॉक्टरेट थीसिस पर काम किया। 1921 में विज्ञान स्नातकोत्तर (एम. एस सी.) प्राप्त की, जिसके लिए उन्होंने ‘प्रोविंशियल डिसेंट्रलाइजेशन ऑफ इंपीरियल फायनान्स इन ब्रिटिश इंडिया’ (ब्रिटिश भारत में शाही अर्थव्यवस्था का प्रांतीय विकेंद्रीकरण) खोज ग्रंथ प्रस्तुत की। 1922 में, उन्हें ग्रेज इन ने बैरिस्टर-एट-लॉ की डिग्री प्रदान की और उन्हें ब्रिटिश बार में बैरिस्टर के रूप में प्रवेश मिल गया। 1923 में, उन्होंने अर्थशास्त्र में डी०एससी० (डॉक्टर ऑफ साइंस) की उपाधि प्राप्त की। उनकी थीसिस “दी प्रॉब्लम ऑफ दी रूपी: इट्स ओरीजन एण्ड इट्स सॉल्यूशन” पर थी। लंदन में अध्ययन पूर्ण कर के भारत लौटते हुए भीमराव आम्बेडकर तीन महीने जर्मनी में रुके, जहाँ उन्होंने बॉन विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। उनकी तीसरी और चौथी डॉक्टरेट्स (एल एल० डी०, कोलंबिया विश्वविद्यालय, 1952 और डी०लिट, उस्मानिया विश्वविद्यालय, 1953) सम्मानित उपाधियाँ थी।

भीमराव आम्बेडकर ने छुआछूत के विरुद्ध में संघर्ष शुरू किया। जिसे सन् 1927 में एक व्यापक एवं सक्रिय आंदोलन के रूप में आरंभ करने का निर्णय लिया गया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलन, सत्याग्रहों और जलूसों के द्वारा, पेयजल के सार्वजनिक संसाधन समाज के सभी वर्गों के लिए खुलवाने के साथ ही उन्होंने अछूतों को भी हिन्दू – मंदिर में प्रवेश करने का अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। आम्बेडकर

ने कहा था “छुआछूत गुलामी से भी बदतर है।” उन्होंने 1927 में प्राचीन हिन्दू ग्रंथ ‘मनुस्मृति’ का खंडन किया क्योंकि इसमें कई पद खुलकर जातीय भेदभाव व जातिवाद का समर्थन करते हैं। 25 दिसम्बर 1927 को उन्होंने हजारों अनुयायियों के साथ मनुस्मृति की प्रतियां जलाई। इस कारण से 25 दिसंबर को आम्बेडकरवादियों और हिन्दू दलितों द्वारा मनुस्मृति दहन दिवस के रूप में मनाया जाता है।

तब तक भीमराव आम्बेडकर उस वक्त की सबसे बड़ी अछूत राजनीतिक हस्ती बन चुके थे। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और उसके नेता महात्मा गाँधी की भी आलोचना की, उन्होंने उन पर अछूत समुदाय को एक करुणा की वस्तु के रूप में प्रस्तुत करने का आरोप लगाया। आम्बेडकर ब्रिटिश के विफलताओं से भी असंतुष्ट थे। लंदन में 8 अगस्त, 1930 को “प्रथम गोलमेज सम्मेलन” के दौरान अम्बेडकर ने अपनी राजनीतिक दृष्टि को दुनिया के सामने रखा, जिसके अनुसार शोषित वर्ग की सुरक्षा उसके सरकार और कांग्रेस दोनों से स्वतंत्र होने में है। अम्बेडकर की अछूत समुदाय में बढ़ती लोकप्रियता और जन समर्थन के चलते उनको 1931 में लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। जहाँ उनकी अछूतों को पृथक निर्वाचिका देने के मुद्दे पर गाँधी से तीखी बहस हुई एवं ब्रिटिश डॉ० भीमराव आम्बेडकर के विचारों से सहमत हुए। इस समझौते के तहत आम्बेडकर द्वारा उठाई गई राजनैतिक प्रतिनिधित्व की मांग को मानते हुए पृथक निर्वाचक में दलित वर्ग को “दो वोटों” का अधिकार प्रदान किया गया।

आम्बेडकर के द्वारा संविधान का निर्माण

गाँधी व कांग्रेस की कटु आलोचना के बावजूद आम्बेडकर की प्रतिष्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेता की थी। जिसके कारण जब 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तित्व में आई तो उसने

आम्बेडकर को देश के पहले “कानून एवं – न्याय मंत्री” के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया। 29 अगस्त 1947 को आम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के लिए नए संविधान की रचना करने के लिए संविधान की मसौदा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। संविधान निर्माण के कार्य में आम्बेडकर की बौद्ध संघ रीतियों का ज्ञान और अन्य बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन भी काम आया।

आम्बेडकर एक बुद्धिमान संविधान विशेषज्ञ थे, उन्होंने लगभग “60 देशों” के संविधानों का अध्ययन किया था। आम्बेडकर को “भारत के संविधान का पिता” के रूप में मान्यता प्राप्त है। इनकी विशेषता थी कि जिसे “ग्रैनविल ऑस्टिन” ने पहला और सबसे महत्वपूर्ण समाजिक दस्तावेज के रूप में आम्बेडकर द्वारा तैयार भारतीय संविधान का वर्णन किया। आम्बेडकर द्वारा अनुच्छेद 370 का विरोध किया गया था जिसके द्वारा जम्मू – कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिया गया था। आम्बेडकर ने विधान सभा में बहस के द्वारा “एक समान नागरिक संहिता” को अपनाने की सिफारिश करके भारतीय समाज में सुधार लाने की इच्छा प्रकट की थी। आम्बेडकर वास्तव में समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे।

आम्बेडकर का राजनीतिक कैरियर 1926 में शुरू हुआ और 1956 तक वो राजनीतिक क्षेत्र में विभिन्न पदों पर रहे। दिसंबर 1926 में, बॉम्बे के गवर्नर ने उन्हें बॉम्बे विधान परिषद के सदस्य के रूप में नामित किया, उन्होंने अपने कर्तव्यों को गंभीरता से लिया, और कई अवसर आर्थिक मामलों पर भाषण दिया। वे 1936 तक बॉम्बे लेजिस्लेटिव के सदस्य थे।

1936 में, आम्बेडकर ने स्वतंत्र लेबर पार्टी की स्थापना की जो 1937 में केन्द्रीय विधान सभा चुनावों में 13 सीटें जीती। आम्बेडकर विधान सभा में चुने गये और 1942 तक सदस्य रहे। 15 मई 1936 को उन्होंने अपनी पुस्तक ‘एनीहिलेशन ऑफ कास्ट’ (जातिप्रथा का विनाश) प्रकाशित की। इस पुस्तक

के द्वारा हिन्दू धार्मिक नेताओ और जाति व्यवस्था की जोरदार आलोचना की ।

राज्यसभा सदस्य के रूप में उनका पहला कार्यकाल 3 अप्रैल 1952 से 2 अप्रैल 1956 के बीच था, लेकिन कार्यकाल समाप्त होने से पहले ही 6 दिसम्बर 1956 को उनका निधन हो गया ।



श्रीमती अंबिका के श्रीमती अंबिका के पत्नी श्री दीपक के वी सहायक पर्यवेक्षक



आज के आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएं शक्तिशाली बनती हैं जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है। इसमें ऐसी ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सके ।

महिला सशक्तिकरण' के बारे में जानने से पहले हमें ये समझ लेना चाहिए। 'महिला सशक्तिकरण' के इस लेख में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं, जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हो। यह लेख आपको समाज में महिलाओं की स्थिति और अधिकारों से अवगत करवाने में सक्षम होगा और महिला सशक्तिकरण के विषय में आपकी जानकारी को और अधिक विस्तृत करेगा ।

प्रस्तावना

हमारे आदि – ग्रंथों में नारी के महत्त्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि **“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:”** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। बदलते समय के साथ आधुनिक युग की नारी पढ़-लिख कर स्वतंत्र है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है तथा स्वयं अपने निर्णय लेती हैं। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसलों, आय, संपत्ति और दूसरी वस्तुओं की उपलब्धता से है, इन सुविधाओं को पाकर ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊँचा कर सकती हैं। राष्ट्र के विकास में महिलाओं का महत्त्व और अधिकार के बारे में समाज में जागरूकता लाने के लिये मातृ दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आदि जैसे कई सारे कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। महिलाओं को कई क्षेत्र में विकास की जरूरत है।

महिलाएँ हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। अब वह चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करती है। इसी वजह से राष्ट्र के विकास के महान काम में महिलाओं की भूमिका और योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाली राक्षसी सोच का अंत करना जरूरी है, जैसे – दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा। अपने देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है। जहाँ महिलाएँ अपने परिवार के साथ-साथ समाज के बुरे बर्ताव से भी पीड़ित हैं। भारत में अनपढ़ों की संख्या में महिलाएँ सबसे ज्यादा हैं।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना।

जिससे उन्हें रोजगार, शिक्षा, आर्थिक तरक्की के बराबरी के मौके मिल सकें, सामाजिक स्वतंत्रता और तरक्की प्राप्त कर सकें। स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है अर्थात् स्त्री से ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सृजन की शक्ति को विकसित-परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सु-अवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण का आशय है। महिला सशक्तिकरण को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाओं में उस शक्ति का प्रवाह होता है, जिससे वे अपने जीवन से जुड़े सारे फैसले स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती हैं। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही महिला सशक्तिकरण है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता के बहुत से कारण सामने आते हैं। महिला सशक्तिकरण की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि प्राचीन समय से भारत में लैंगिक असमानता थी और पुरुषप्रधान समाज था। महिलाओं को उनके अपने परिवार और समाज द्वारा कई कारणों से दबाया गया तथा उनके साथ कई प्रकार की हिंसा हुई और परिवार और समाज में भेदभाव भी किया गया ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी दिखाई पड़ता है। प्राचीन काल की अपेक्षा मध्य काल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफी कमी आयी। जितना सम्मान उन्हें प्राचीन काल में दिया जाता था, मध्य काल में वह सम्मान घटने लगा था।

भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिये माँ, बहन, पुत्री, पत्नी के रूप में देवियों को पूजने की परंपरा है लेकिन आज केवल यह एक ढोंग मात्र रह गया है। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाली लैंगिक असमानता और बुरी प्रथाओं को

हटाने के लिये सरकार द्वारा कई सारे कानून और संवैधानिक अधिकार लागू किए गए हैं। हालाँकि ऐसे बड़े विषय को सुलझाने के लिये महिलाओं सहित सभी के सतत सहयोग की आवश्यकता है। आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकारों को लेकर ज्यादा जागरूक है जिसके परिणाम स्वरूप कई सारे स्वयं-सेवी समूह और एनजीओ आदि इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।

महिला सशक्तिकरण के लाभ

महिला सशक्तिकरण के बिना देश व समाज में नारी को वह स्थान नहीं मिल सकता, जिसकी वह हमेशा से हकदार रही है। सशक्तिकरण के बिना वह सदियों पुरानी परम्पराओं और कुरीतियों से लोहा नहीं ले सकती। बन्धनों से मुक्त होकर अपने निर्णय खुद नहीं ले सकती। महिला सशक्तिकरण के अभाव में उनके लिए अपनी निजी स्वतंत्रता और अपने फैसलों पर अधिकार पाना और भी मुश्किल होगा।

उपसंहार

जिस तरह से भारत आज दुनिया के सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिए महिलाओं के विरुद्ध बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जो समाज की पितृसत्तात्मक

और पुरुष युक्त व्यवस्था है। यह बहुत आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरुद्ध अपनी पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाए।

भले ही आज के समाज में कई भारतीय महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील आदि बन चुकी हो, लेकिन फिर भी महिलाओं को समाज के समर्थन की आवश्यकता है। शिक्षा और आजादीपूर्वक कार्य करना, सुरक्षित यात्रा, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आजादी उनका हक है। भारत की सामाजिक-आर्थिक प्रगति काफी हद तक भारतीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रगति पर निर्भर करती है।

महिला सशक्तिकरण महिलाओं को अपने हक के लिए लड़ने में मदद करता है। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देना चाहिए। इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है। महिलाएँ अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। आज की नारी अब जागृत और सक्रिय है। किसी ने बहुत अच्छी बात कही है **“नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी, तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी।”** वर्तमान में नारी ने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है कि लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास की अपेक्षा है।

संघर्ष की ज्योति : दृढ़ संकल्प का दीप



श्री अंकित सिंह
लेखापरीक्षक

क्या लगता है मैं रुकूँगा नहीं, असंभव ।
क्या लगता है मैं झुकूँगा नहीं, असंभव ॥
कष्टों को खूँटी पर रखकर सूर्य से नजर मिलायेंगे ।
असीम मनोबल को लेकर रण-भूमि में भिड़ जाएंगे ॥

हम खुद से नौका बनाएंगे और खुद ही पार लगाएंगे ।
अब उनसे क्या ही आस रखे जो बाते सिर्फ बनाएंगे ॥
संघर्षों की आँधी में हम अपना दीप जलाएंगे ।
तूफानों की क्या मजाल जो जलते दीप बुझायेंगे ॥

रोकेगी मुझको आँधी क्या मैं पर्वत बन टकराऊँगा ।
बरसेगा मुझपर अम्बर क्या मैं उसको आँख दिखाऊँगा ॥
विहनों से नहीं डरने वाला न हाथ खड़े करने वाला ।
पुरुषार्थ ही मेरा ईश्वर है मैं स्वयं भाग्य लिखने वाला ॥

संघर्ष पथ पर बढ़ते चलूँगा कर्म नित करते चलूँगा ।
हार मानूँगा नहीं अहसान मानूँगा नहीं ॥



श्री जे ए साईकुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

डरना मना है

“जब तीन-तीन प्रेतात्माएं बोलने लगेंगी, मुर्दों के भी होश उड़ जाएंगे।”

सब दहलान में टी.वी देखने में व्यस्त हैं। नानी कबसे आवाज़ कम करने के लिए बोल रही है। कोई असर न होने पर, नानी ज़ोर से चिल्लाई। अवलोकितेस्वरा के हाथ में रिमोट उठाकर दो तीन बार बटन दबाने पर टी.वी की आवाज़ कम हो गई। बिल्कुल सन्नाटा-सा छा गया। सन्नाटे को लेकर एक-दूसरे की आंखें सवाल करने लगी। अम्मा तो घर में नहीं थी। आखरी सालाना इम्तेहान के लिए मुश्किल से पन्द्रह-बीस दिन ही बचे थे। मैत्रेया को छोड़कर किसी का पढ़ाई करने का मन नहीं है। नानी के मन में ऐसा ख्याल आया। अचानक मौसम बदल गया, हवा बहने लगी। थोड़ी देर में हवा तेज़ होने लगी। खिड़कियाँ ज़ोर से फड़फड़ाने लगी। खिड़की के पर्दे तेजी से उड़ने लगे। अवलोकितेस्वरा आगे बढ़कर खिड़कियों को बंद करने में नानी की मदद करने लगा।

“कमबख्त बिजली भी अभी जाना था।” नानी टहल रही थी। “कोई जाकर रसोई से माचिस की डिब्बी तो लाओ।” अवलोकितेस्वरा ने क्षितिगर्भा को देखा। “हाँ डरपोक, हाँ! मैं ही अकेला बहादुर हूँ यहाँ, जा रहा हूँ, आता हूँ लेकर।

रसोई जाते समय क्षितिगर्भा की नज़र बीच के कमरे पर पड़ी। क्षितिगर्भा बहुत ज़ोर से चिल्लाया। “नानी”

वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि सभी अंधेरे में डर गये।

“शैतान, अंधेरे में मजाक सूझ रहा है क्या? शरारत की भी हद होती है। भूत को देख लिया क्या जो इतना ज़ोर से चिल्लाया।” नानी बहुत गुस्से में बोली।

“नानी बीच के कमरे में खोपड़ी....” क्षितिगर्भा डरते-डरते फिर से बोला “खोपड़ी के आंखे लाल.....”

क्षितिगर्भा के डर से पसीने छूटने लगे। वह केवल बारह साल का था और उतना भी बहादुर नहीं था। इतने में अचानक से खिड़की खुली और आवाज़ के साथ एकदम बंद हो गई। नानी भी डर गई। अवलोकितेस्वरा कदम आगे बढ़ना तो दूर, चूहें की तरह कोने में छिपकर बैठ गया।

“हे भगवान यह क्या हों रहा है आज? इतनी तेज हवाएँ और मार्च के महीने में बारिश, और कौनसी खोपड़ी? कैसी लाल आँखें? वही ठहर! शैतान, मैं आ रही हूँ।”

गुस्से से नानी क्षितिगर्भा के बाल पकड़कर खींचने ही वाली थी कि नानी का गुस्सा उतर गया।

क्षितिगर्भा को देख के नानी धीरे से बोली “इतना पसीना क्यों निकल रहा है बेटा”

क्षितिगर्भा कांपते हुए बोला “अंदर देखो..... खोपड़ी.....लाल आँखे”

यह सुनते ही नानी की नज़र खोपड़ी पर पड़ी। पलभर के लिए नानी के दिल में डर पैदा हों गया। डर से नानी की कुछ याद आने लगा।

“मैत्रेया को कितना समझाया है, इस तरह कब्रिस्तान से खोपड़ी या हड्डियाँ लाना सही नहीं है।”

नानी का मन भी डरने लगा।

“पर यह कमबख्त तो किसी की भी नहीं सुनता।”

“जबकि यह खोपड़ी घर में लाने के बाद उसकी हथेलियों से बिना घाव खून टपक रहा था।”

नानी का बड़बड़ाना रुका नहीं था।

“इन बच्चों को बुजुर्गों की नसीहत की कोई परवाह नहीं।”

“अब ये शामत कभी छोड़ेगी कि नहीं, मालूम नहीं।”

यह कहते हुए नानी के चेहरे पर उदासी छा गई।

“इस कमरे में तो बिजली है, शायद एक फेज की बिजली चली गई है।”

कहकर कमरे में जल रही बत्ती बुझा दी। तू अब रसोईघर जाकर माचिस लेकर आ। मैं छत पर जाकर मैत्रेया को बुलाकर लाती हूँ, बेचारा अंधेरे में क्या कर रहा होगा। क्षितिगर्भा ने सिर हिलाया और ‘जी ठीक है’ कहते हुए रसोईघर की ओर चला गया। रसोईघर में जलती हुई मोमबत्ती दिखाई दी और चौकाने वाली बात यह थी कि नानी मैत्रेया को खोजने छत पर गई थी और वो यहाँ अकेला मोमबत्ती के सामने पीठ करके ज़मीन पर हाथ के सहारे बैठा हुआ है।

“तू यहाँ क्या कर रहा है?”

क्षितिगर्भा के पूछने पर भी मैत्रेया ने कोई जवाब नहीं दिया,

घबराते हुए क्षितिगर्भा फिर से बोला “तुझे खोजने नानी छत पर गई है।”

“नानी तुझे छत पर ढूँढ़ रही है और तू इधर रसोईघर में है, नीचे आने के बाद आवाज़ तो देता”

पर कोई जवाब नहीं आया।

“क्या कर रहा है तू?” क्षितिगर्भा ने पूछा

फिर से कोई जवाब नहीं आया।

“कुछ तो बोल, बोल क्यों नहीं रहा है?”

क्षितिगर्भा मैत्रेया के पास जाकर खड़ा हुआ, उसकी पीठ दिख रही थी, वह ज़मीन पर बैठा था और खाना खा रहा था।

“बिजली आने तक सब्र नहीं कर सकता था क्या तू, अँधेरे में खाना खाने की क्या ज़रूरत है?”

क्षितिगर्भा की नज़र खाने पर पड़ी और वह क्या देखता है की खाना बिल्कुल लाल था और खाना थाली में नहीं ज़मीन पर था। वह ज़मीन से ही खा रहा था। क्षितिगर्भा को सब अजीब-सा लग रहा था।

क्षितिगर्भा यह देखकर पूरी तरह से डर गया और उसके पसीने छूटने लगे और वह पसीने से तर-बत्तर हो गया। पसीना कान के पीछे से गर्दन तक आ गया था और उसके मन में बहुत ज्यादा डर समा गया था। छाती गरम होने लगी। उसने धीरे से मैत्रेया के सिर पर थपथपाया। लेकिन कोई जवाब नहीं, कोई असर नहीं। कंधे पर हाथ रखाकर उसने फिर आवाज़ दी, “मैत्रेया, मैत्रेया!”

क्षितिगर्भा की आवाज़ तेज होने लगी।

“मैत्रेया! मैत्रेया!”

उधर नानी छत पर आवाज़ लगा रही थी। “मैत्रेया, मैत्रेया”

छत के कोने में मुँडेर की दीवार के पास एक पलंग पड़ा है। मच्छरदानी लटक रही थी। बगल की मेज़ पर किताबें पड़ी हुई थी और पन्ने हवा के झोके से जल्दी-जल्दी पलट रहे थे। हवा इतनी तेज नहीं थी कि पन्ने पलटे। नानी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उन्हें कुछ अजीब-सा लगा। वे पलंग की ओर बढ़ने लगी। ऐसा महसूस हो रहा था की मच्छरदानी के अंदर कोई है लेकिन अंधेरा अधिक होने की वजह से अच्छे से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था फिर भी वे करीब गईं।

मैत्रेया, मच्छरदानी के भीतर नहीं था, नानी की नज़र पलंग की बाँए तरफ पड़ी। पतली दीवार के ऊपर कोई खड़ा है-ऐसा लग रहा था। सच में दीवार पर तो मैत्रेया खड़ा है।

“मैत्रेया, मैत्रेया, मैत्रेया, पागल बच्चा दीवार पर क्यों खड़ा है, नीचे उतर वहाँ से। क्या कर रहा है तू, यह खतरनाक है बेटा। नीचे उतर जल्दी।

मैत्रेया के इस हरकत से नानी चौक गई और डर भी गई। नानी मैत्रेया के पास जाने लगी।

“नजदीक मत आना”

मैत्रेया ने बहुत ज़ोर से चिल्लाया। उसे इस तरह चिल्लाते हुए नानी ने कभी नहीं देखा था। आवाज़ इतनी तेज और भयानक थी कि नानी के दिल की धड़कन और ज्यादा बढ़ गई। नानी दो कदम पीछे खिसक गई।

मैत्रेया फिर से चिल्लाया “गलती से भी आगे मत आना, आगे बढ़ने की कोशिश भी की तो सीधा नीचे कूद जाऊंगा।” वह अपने पाँव धीरे-धीरे आगे बढ़ाने लगा। अचानक वह अपने पैरों के पंजों पर खड़ा हो गया।

वहाँ रसोई में क्षितिगर्भा की नज़र मैत्रेया के खाने में छिपी एक मांसपेशी पर पड़ी और वह मांसपेशी अंडे के आकार की थी। फिर मैत्रेया ने अन्न के दाने को उस मांसपेशी पर से हटाया। लेकिन वह मांसपेशी अंडे से थोड़ी छोटी थी। क्षितिगर्भा बहुत डर गया जब उसने देखा कि वह किसी मनुष्य की आँख है। मैत्रेया के हाथ में खाने का निवाला था तभी उस निवाले से वो अंग निकला और ऊपर की ओर उठकर हवा में लटकने लगा। जैसे ही मनुष्य के लटकते हुए अंग से क्षितिगर्भा की नज़र मिली तो उसके एकदम से होश उड़ गए और पूरा शरीर पसीने से तर-बतर काँपने लगा।

कपड़े पसीने से गीले हो गए थे, मानो जैसे बारिश में भीग के आया हो। क्षितिगर्भा के हाथ पैर ठंडे पड़ने लगे। खुद को संभालना मुश्किल हो रहा था उसके लिए। उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि रुके या भाग जाए। अंधेरा इतना था कि उसे दरवाजा भी नज़र नहीं आ रहा था। वह इधर उधर दरवाजा ढूँढने के लिए सर घूमने लगा ओर पता नहीं उसका सर ऐसा घूमा कि वह सामने के बजाय पीछे घूम गया। इस घबराहट में वो देखता क्या है कि वह एकदम उसके सामने खड़ा है। धीरे धीरे नजदीक आ रहा है और इतने नजदीक आ गया कि उसकी आँख से आँख मिलाने लगी।

वह आँख मानो कि गुस्से में थी और उससे आँसू टपकने लगे थे। एक एक आँसू जमीन पर गिर के अंगारों का रूप ले रहा था। वे आँसू खून के आँसू बन गए। क्षितिगर्भा दर पीछे हुआ तो उसे अपने कंधे पर एक हाथ महसूस हुआ। उसने छैन की सांस की ली नानी आ गई। उसने हाथ को पकड़ ओर महसूस करने की कोशिश की। वह हाथ नानी का नहीं था। थोड़े समय बाद वह हाथ खतम हों गया। वह एक कटा हुआ हाथ था। वह हाथ कंधे से होते हुए गले पर आ गया। क्षितिगर्भा बुरी तरह डर गया था।

उधर अवलोकितेस्वरा टीवी के रिमोट से खेल रहा था। वह मात्र 9 वर्ष का था। जब जब भी वह बटन दबाता एक नई रोशनी निकलती रिमोट से मशाल की तरह। वह छोटा था पर जब उसने देखा कि रिमोट में सेल नहीं है। उसे हसशूय की कुछ गलत है। उसने टीवी की तरफ भागने का सोचा। वह दौड़ कर टीवी की तरफ भागने के लिए उठा। वह भाग रहा था पर टीवी के नजदीक पहुँच ही नहीं पा रहा था। उसका और टीवी का फासला कम ही नहीं हो रहा था। उसने जब घड़ी तो देखा तो वह भी अवलोकितेस्वरा के समान दौड़ रहा था। कभी तेज तो कभी धीरे। वह अपने आप को रोकने की कोशिश कर रहा था पर असमर्थ था। फिर अवलोकितेस्वरा की गति धीमी होने लगी। वह थका नहीं था पर कुछ जो पैरों को रोक रहा था। उसके पैर जमीन में धस रहे थे मानों जैसे किसी दल-दल में हों। वह धसता ही जा रहा था। मदद के लिए भी कोई पास नहीं था।

घड़ी का हाथ अवलोकितेस्वरा की तरफ बढ़ने लगा । उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये क्या हों रहा है। उसने जैसे ही घड़ी को अपनी तरफ आता हुआ कांटा पकड़ तो गिरगिट की जीभ की तरह घड़ी ने कांटे की मदद से अवलोकितेस्वरा को अपनी तरफ खींच लिया । उसके बाहर आते ही कीचड़ सीढ़ी में बदल गया । जो एक के बाद एक बनती चली जा रही थी । सीढ़ियाँ घड़ी की तरफ जा रही थी और घड़ी अंतरिक्ष में स्थित मालूम हो रही थी। क्यों सीढ़ियाँ अंतरिक्ष में स्थित घड़ी की तरफ जा रहे हैं? क्या ये एक बुरा संकेत है। क्या ये एक चेतावनी है। क्यों ये चेतावनी?

बुजुरगों का कहना है कि, जो ज़िन्दगी अधूरी जी कर मरते हैं, ख्वाइशों भी अधूरी रह जाती है, अधूरी ख्वाइशों को पूरा करने के लिए ये आत्माएं किसी कारण से अपनी-अपनी कब्र से बाहर आते हैं । कुछ आत्माएं वजह ढूंढ कर कब्र से बाहर आती हैं और कुछ आत्माओं को गलती से बाहर लाया जाता है ।

वो प्रेतात्मा ही क्या जिसने किसी को डराया न हो ।

प्रकाशक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, केरल

तिरुवनंतपुरम

